





**SANGEETA**

# **KANAKATARA**

**ADOPTATION OF LALGOHAR**

**IN FIVE ACTS**

**BY**

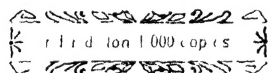
**D. SITHA RAMA RAO**

*Published by*

**MADETY SANYASAYYA,**

*Book-seller,*

**RAJAHMUNDRY**



**ape & Co, by K Subbarayudu Bros**

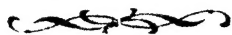
**COCANADA**

**Copy-right Registered**

**1922**

**(Price As 12.**

# ఆంధ్రాబుక్కు-డిపో, రాజమండ్రి.



కాగితములీయక ధలు.

హాతిక ధలు.

మొదటి వాల్వాము	1-12-0	గయోపాఖ్యానము	0 8 0
రెండవ “	1-8 0	రుక్మాంగదచరిత్ర	0 8 0
మూడవ “	1 12-0	కుశలవవిజయము	0 8 0
నాల్గవ “	1-12-0	నలచరిత్ర	0 8 0
ఆఱవ “	1-8-0	సీతాకల్యాణము	0 8 0
ఆగవ “	1-12 0	ద్రౌపదిమానసంశయ	0 8 0
ఏడవ “	1 12 0	హరిశ్చంద్రావిహసము. 361 పట్టాగం	0 8 0
ఎనిమిది “	1-12-0	2 వ భాగం	0 4 0
తవలము.		మూడవ భాగము	0 4 0
సంపద్యశిలక చి   ల   న	1-8-0	ప్రయోగవదచరిత్ర	0 8 0
సుభాగరత్నము “	1-0-0	హరిశ్చంద్ర	0 8 0
కన్నులమంజరి “	1 0-0	నియాకరవిజయము	0 8 0
గంపతి 1 వ భాగం డిటా	0 12 0	కన్యసంపదాయని	0 8 0
డిటా 2 వ భాగం డిటా	0 12 0	రామదానుచరిత్ర	0 4 0
అపాల్యాబాయి డిటా	0 12 0	జయప్రదచరిత్ర	0 8 0
సోమలత “	0-12-0	పురింధరదానుచరిత్ర	0 8 0
రాజరత్నము చి   ల   న	0-12-0	కుచేలోపాఖ్యానం	0 8 0
స్థితిచరిత్ర “	0-12-0	కనీరుదానుచరిత్ర	1 0 0
రామచంద్రవిజయం డిటా	0 10 0	సీతాకల్యాణము డిటా	1 4 0
రామకృష్ణపరమహంస “	1-0-0	నాగోపాఖ్యానం కొత్త “	0 8 0
భారతరత్నము డిటా	0 8 0	ప్రసన్నచరిత్ర	0 4 0
కృష్ణవేణి డిటా	0 6 0	సాంగంధికచరిత్ర	0 8 0
సీమంతిందరి	1-0-0	కుచేలోపాఖ్యానం	0 8 0
పురింజయ	1-2-0	సుకన్యదానునికీర్తన	0 8 0
అశ్రుపాత్రాశ్రయము	1-4-0	కన్యచరిత్ర	0 4 0
పెద్దపురవంసావచరిత్ర	0 10 0	సాతేక్షనరామాయణం	1 8 0
లలితకుమారి డిటా	0 10 0	లక్ష్మీవిధువచనం	0 8 0
సాక్షి డిటా	2 4 0		
నానకుచరిత్ర డిటా	0 12 0		
సృష్టచరిత్రము డిటా	0 4 0		



నలయువారికి వాయిదా:—

నూడో సన్యాసయ్య,  
ఆంధ్రాబుక్కు-డిపో, రాజమండ్రి.







సంకీర్తన : ౧౭౫.

పా' పిమ్మూ' నమ్మ.

(1) 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1041 1042 1043 1044 1045 1046 1047 1048 1049 1050 1051 105

အနောက်မှ အရှေ့သို့      အရှေ့မှ အနောက်သို့

ప. శ్రీనివాసులు పు. 'ప' గానాకా హానుని నాగిని సమాధికి  
 గోవుమా నమో" సమాధి

పం. ఇవే ముగిలెప్పుడు । సేనే గూవిస్వముడు సేవల కన నాది  
దేవుడవ్వు మాచుర । శ్రీవి  
భావములర గిత్తి కనుభావించి కన తార నాట రూపరూప  
దలచి నీసత్కృతజూప సోరెయి ॥ శ్రీవి ।

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84

[ప్ర] వేము:—చిత్త సేవకు—మగల్గి యగు విభాగము.

(2) బెహగూరాగము ఏది తాళము.

ఈసంసారానికి<sup>(1)</sup> । నేనెక్కడదాకెదా

హాస్యానన్ సోపానమున - పయచట బ్రతుకగనోచిత  
యేసంగతి దలపోసనన్ కడువిపరీతముగఁ దోచిమిదిన్  
చీ సంసారము । చీచీ భోగము । చీచీ బాగ్గము.

చిత్రీ—(విశారదునిఁ నూచి) మంత్రీ! విశారదా! ఎప్పుడు చూచినను మదికి సేదో యుకచింత కలుగుచునే యుండునుగదా!

శే. గీ. ఎట్టి పుష్పాబూజిచేసి ♦ యెసఁగునట్టి  
పుష్పమూర్తికేగాని నా ♦ బోటివాని  
కెల్ల సమకూటు సంగోష ♦ మెల్లవేళ  
లగు; నిర్భాగ్యుడను నాచు ♦ నలరుకతన.

విశా—రాజేంద్రా! సివిల్లు నచించుటకుఁ గాగణము నేనూ  
సాపజాలక యున్నాను.

చిత్రీ—పవెఱుగిని దేమున్నది?

శే. అన్నయటలను నాపరున ♦ నాచితభక్తిబూనడామె; వి  
ద్యనున్నట్లైన యార్యులు కృ ♦ పక వచియించెడుమూట లెంచు  
యన్నఁజూచికోప; పురి ♦ చున్నజనంబుల వేచుచుండె; వా  
గెన్నయ బుద్ధిచెచ్చుకొను ♦ నేరియు దోచగుతమ్ముడక్కట  
పెక్కురీతుల నాతని కనేకనితులు నక్కానించితిని. దుష్టబుద్ధియ  
నామము సాగియు జేసికొనుచున్నాడు. వాడెట్టి కూరకార్యం  
లొనర్చుచున్నను; నేకగర్భజాతుం డగుటజేసి నాకు వానియందు  
త్పల్కును పోషియన్నది. పోషియ్యు. శిక్షింపమన్నచో నందులకి  
గూడ చిత్తము సన్నులొపవయ్యెను. నష్టభాబున వర్తించుచు;  
వానిని సద్వర్తనబున నెల్ల బెట్టఁగలనో యూహపజాలక యున్నా  
విశా—దేనా? ఆతఁడేక్రిమముగా నుజురుండగుననితలం చెడ  
చిత్రీ—చుతే! అది యెక్కడిమాట.

శే. గీ. పుష్పాబూజి బుద్ధులు ♦ పుడమియందు  
బుడకలనెకాని పోవంచు ♦ బుధులు పల్కు  
వాక్యమాలింపవే? నీవు ♦ వరసఖుండ  
కుమతి, సుమతియగునె వట్టి ♦ కోర్కెగాని.



తమ్ము విషయమై యట్లభిమ నంకలనలన బ్రయోజనములేదు.

[జెట్లో కోలాహలము.]

విశా—(నేనకుఁజూచి) నేవకా ! ఆకలనల మేమియో విచారించి రమ్ము.

నేన—చిత్తము. (సిమ్మ)మించి మోటక ప, పేకాచి) దేవా ! పురజనులు కొండలు తమ దగ్గినార్థము వచ్చియున్నది.

చిత్ర—మంత్రీ ! కి గొంతులకు వచ్చియున్నారోకిదా ! (అలాచించి) తమ్ముని గొమ్మత్త్యంబుల జెప్పుకొనుటకే వచ్చియున్నారని శలంచెదను. (నేనకుఁజూచి) నేవకా ! వాని ల పరకరాసమ్ము.

నేన—చిత్తము. (సిమ్మ)మించి మోటక పోరులతో బ్రవేంచును.)

(3) పౌరులందరు కలస పాడపి పాట.

బేహగురాగము ఏకతాళము.

ప॥ దండాలండో బాబయ్యా మీపాదాలగు దండాలండో ॥

॥ ప॥ దండాలండో బాబయ్యా మీపాదాలగు దండాలండో ॥ దం॥  
గుండగుండు మీదప్రబుద్ధి మమురూఖిపైబ్బి బొధంపుచును  
మెండుగను గుండగములు । మేదినిజనులకు నెల్పుచునుండను॥  
గండము గండము యీపురమందనగనగా గుకీమేముండినచో  
జెండడ మాకంతములక । యెందుకు మాకీయమదుండన  
చాలో॥ దం॥

ప్రథమ పౌరుఁడు—(రాజుఁజూచి) మహాహృదయ !

సీ. కడుపులోపల నీరు ♦ కదలకుండంగ ని

న్నాళ్ళు నీదగు పాల ♦ సంబునందె

నాలుబిడ్డలతోడ ♦ నతిసౌఖ్య మందుచు

నున్నవారముకాని ♦ యర్హితేడ

నేటికేమందు; మా ♦ పాటు లెవ్వాడుగాం

చి కరుణదాల్చి ర ♦ క్షింపదలచు

నిత నొకదినమైన ♦ నేముండఁగాఁ జాల

మిపురంబున మీరు ♦ మియరుజుఁడు

తే. గీ. హఁలుగగనుచుఁ బ్రజ్జ్వలలేని ♦ యవ్వతలము

నేలుకొనుచుండు డింక యే ♦ మే మేగువారి

మానుబిడ్డలతోడ ను ♦ గాఁతులగు

సెలవాసగుము పోగుము ♦ శుభ్రుగితిని.

ద్వి-పా—

మ. ధరణీనాయకి, మేముబాంబు కడుబా ♦ ధల జూప, మొక్కింత నీ

కరుణాదృష్టిని జూడకున్నఁ బురివే ♦ గంతాసి, యెందేనియన్

సరగ్గ జేరి నుఖాపఁగాఁగలము సు ♦ సంప్ర మేపారఁగా

నరయన్రెండు తెలుగులందు భవన్ ♦ యాభీష్ట మెట్లున్నదో.

ధన—ఇగకను రాజుగారియభీష్ట మెట్లున్న దో యని యడుగు చుంటివా. వారియభిప్రాయ మెట్లుండును? వారి తమ్ముడుగారిని వారు కండించెదరా యేమి?

చిత్ర—(పౌరులనుజూచి) పౌరులారా ! ఏమేమీ ! మీరు మంతమ్మడగు దుష్టబుద్ధితోత వెతలబాల్సోయఁబడి నచ్చితిరా? అన్నా! ఎంతకష్టము?

[దుష్టబుద్ధి ప్రవేశించి చాటుగానుంచును.]

దుష్ట—(తనలో) మీరు నావిషయమై యగ్రిజునితోఁ జెప్పుటకు వచ్చినారుకాబోలు. ఏమనిచెప్పెదరో విందునుగాఁత.

చిత్ర—పౌరులారా ! ఆకుట్టబుద్ధి మిమ్ముల నేతెలుగున బాధల బెట్టుచున్నాఁడో యెటుంగివచ్చనా?

ధన—రాజేంద్రా ! “సిగ్గు వదలినవానికి భయముండ”దట. చల్లకువచ్చి మూతదాచినందువలనఁ బ్రయోజనం బేమియున్నది? (తక్కినవారిం జూచి) మీకష్టములు రాజగారిని మొట్టవెట్టుకొనుడు. వారికంటె మనకు దిక్కెవ్వరు. ఏమిటో ! మన కడుపులోనున్న మంటచేత యాపుంసు విడిచి వెళ్ళిపోయితిమని చెప్పుచుము గాని, మన మట్లు నేయనూలేము. రాజగారు మనలను ఎదలనూలేరు.

హా-పా—(రాజుం జూచి) దేనా ! మీసోదరుడగు దుష్టబుద్ధినిగూర్చి యిదిచేసె, నదిచేయలేదని చెప్పుటకు వలనుపడదు.

తే. గీ. వలయునంతటి భాగ్యంబు † గలిగియున్న  
ననుభవించుదుగాని మా † యట్టి బీద  
ఒరుల నేచటన్యాయులై † య్మోక్షతులకు  
నలచె మా బాధఁబాటుగఁ † బార్థివేంద్ర.

ద్వి పా—

మ. సురసేవించి, యనేక పుష్పచరితుల్ † చుట్టూ దనుగొల్చిరా  
దిరుగున్ కేధుల; గారిణాబరయకె † తీట్టున్ బ్రజ్జఘాబునున్  
బరకాంతామణి కంటబహిగుణన్ † వర్ణించి మెటాడు; ని  
కరణిన్ వర్ణిలు దుష్టబుద్ధిగుణముల్ † య్మోచాలచూడామణి.

హా-పా—

తే. గీ. మొన్న సాయంత్రమున మా † కన్నెపౌరుగు  
వారి గృహమానకునరిగి † వచ్చుచుండ  
భయముబూనక దానిపైఁ † బడఁగ నెంచె  
గటగటా ! యేమి తెల్పుదు † య్మోక్షలేంద్ర.

చిత్ర—హరి ! హరి ! ఎంతమాట !

ధన—మహారాజా! నేనును మా పూర్వులముగూడ యీపురంబునందే పెక్కిండ్లనుండి వసింపుచుంటిమి. ఎన్నఁడును మేమిట్టికష్టంబుల నెఱుంగము. మహాప్రభూ! నేను వయస్సు మీతినవాడను. నాప్రథమ భార్య గతియింకగా మిగులద్రవ్యము వెచ్చించి యొక చిన్న దానిని వివాహము జేసుకొన్నాను. ఎవోకంట నైన నది పడినచో వా రికండ్లు కుట్టుననియెంచి యింటినుండి యివతలకురాకుండఁ జేయుచుంటిని. కాని, యెప్పుడయిన నేబంధుల గృహంబులకైనఁ బోవుటతప్పనియ్యెనుగదా. దేవా! మీరు పాలించుకర్తలని సిగ్గుపడచి చెప్పచున్నాను. మీసోదరుడగు డచ్చబుద్ధి యామె నెప్పుడూచెనోగాని యొకదినంబున సంధ్యాసమయంబున, మాయింటికి నలుగురుతాగ్రుబోతులతోవచ్చి 'యే వియో నగలుకావలెనని చెప్పి కొన్నివస్తువులనుదీయించి, నన్నుబాచి.

కం. “కుడువను గట్టను గలిగియు

బుడతల ముద్దాడుభాగ్య ♦ మునునోచవు; నీ

పడతిని నాకడకంపుము

కడువడి”యని పలికెనట్టి ♦ క్రూర్యగుణంబో.

అందులనాతనికి నేనెన్నో బుద్ధులఁ గలపితినిగాని యాతండు నన్నుఁ గాంచి “ముసలివాడవు. నీకీ జగన్మోహన విగ్రహమగు భార్య యెందులకు? నాతోఁ గాపురముసేయుటకుఁ బురుషు. కొలదిదినంబులలో నేను రాజునగుదును. అప్పుడీయవతి పట్టమహిషి యగునని నుడువుచున్న యవసరంబున నాకస్మికముగా నాభార్య నన్ను భోజనమునకు లెమ్మని చెప్పటకచ్చటికి వచ్చెను ఇతనితోఁ గూడియున్న తాగ్రుబోతులకలడేమి నైగఁజేసెనోగాని వారు నలువురును బలవంతమున నామెను బట్టికొని, గొల్లుగొల్లున విలపించుచున్నను విడువకనేగిరి. ఈతఁడును బరువెత్తెను. ఎట్లాకొంతసేపటికి బ్రాణంబులతో నాభార్యతప్పించుకొనివచ్చినది. ఆమెకడనున్న వస్తువులన్నియు దోచుకొనిరి.

దాష్ట్ర—తనలో, ఓరీ! వైశ్యుడా! నీయిచ్చనచ్చినయట్లు చెప్పము. నిన్ను దుదముట్టించెదను.

చిత్ర—(పౌరులంజూచి)

తే. గీ. హరిహరీ! యెట్టికష్టంబు ♦ లందవలసె  
ధరణిజనులార మీరు, సో ♦ దరునికతన  
తమ్ముడంచును నాచు చి ♦ త్తమ్మునందు  
బరమ కృపదాల్చినందుకు ♦ బ్రీతిఫలంబు.

చిత్ర—(పౌరులను జూచి) పౌరులారా!

(4) కన్నడరాగం - ఆదితాళము.

ప॥ పురజనులారా మీరగుగు.

అ॥ ప॥ వెరగుపడక నిక నిర్భయముగుటై జరి యింపును జగతిలో సం  
తోషమున॥ పుర॥

అరగ నాసహృదరుడని నామది కరుణితున వాని  
శిక్షింపక॥ పుర॥

మ. అవసీనిర్జర పాదసేవకుఁడనై ♦ యశాంత మన్యాయుడు  
ర్వ్యసాయాదులు జేరకుండ నవని ♦ బాలింపుచు; బారుల  
నువివేకంబున నేలువాడె నృపుడై ♦ శోభిల్లు; గాకున్నచో  
నవనీచాలక నామమాతృజనుడి ♦ యార్యుల్ విఘోకింపగ.

తే. గీ. తమ్ముడంచు దలపక చి ♦ త్తమ్మునందు  
వానిదండించి మిముఁబోతు ♦ భవ్యకరుణ  
జింతఁబాసి గృహంబుల ♦ జేరుడింక  
బారులార! సమంచితో ♦ దారులార.

మీరింక సంతాపంబుల బాయుడు. నేను దుష్టబుద్ధిని గారాగృహ  
బద్ధునిగా జేసెదను.

పోతులు—(రాజుజూచి) మమ్మరక్షించు భారమంతయు నీ  
దైయన్నది ఇంక మేము పోలునచ్చెదము.

చిత్ర—మాత్రీ! విశారదా! పోతుల దీనాలాపాలుల వింటివి  
కదా. ఇంక నాకా దుష్టాత్ముడగు దుష్టబుద్ధియెడల నేరొక్కింతయు  
దయదలంపరాదు. నానినికా గారాగ్రహవాసునిగాఁజేసినగాని యీ  
యల్లరులకాదు.

విశా—దీవరవారి చిత్తాన్ని యట్లు నేయవచ్చును.

చిత్ర—సరి. నీగొనాల్చి నీదికలుచునే యాలోచితము  
రమ్ము. పోచెక్కినది.

(ఇరువురూ నిష్క్రమించుచున్నారు)

రంగము:—చిత్ర సేనకుఁ గుఱువలయును.

[చిత్ర సేనకుఁ గుఱువలయునని దీక్షింపుచు వచ్చును]

[ప్రవేశము:—కృష్ణబుద్ధి.]

కృష్ణ—(శనక) బౌరా! పురజనులవాక్యంబులాలించి, నాయ  
గ్రంథాదు నన్ను గారాగాఁబడఁగాఁ జేయఁజెరుగా. ఏమీ! ఆ  
తని సాహసము. అగ్రంథాదుడగుచే నీతఁడే రాజ్యాధిపతియై సమస్త  
సౌఖ్యాలుల కరుభవింపుచు, నానాధితాలుల నీడేర్చక, నాకుఁ గవ  
లసినంత ద్రవ్యంబునొసంగి యని యిచ్చదట్టివాఁడ జూచుచున్నాఁడు.  
ఇంక నే నీతనియెడల నశ్శ్రద్ధవహించి యుంటినేని యీతఁడు నన్ను  
గర్హంబులపాలు జేయును. మఱియు,

తే. గీ. ఇతఁడు జీవించియున్నచో ♦ క్షీణితలమున

నాకు స్వేచ్ఛావిహారము ♦ నకును భంగ

మొదవచ్చుచుండును గావున ♦ మదివి గరుణ

దలంపక సతనిం జంపుట ♦ తగును నాకు.

అట్లానట్టితినేని నేనే రాజును కాగలను. అప్పుడు నన్నెవ్వరు వారింపగలరు ? (ఇంచక యూరకుండి ఆలోచించి) ఏమిదీ ! ఏకగర్భజనితుండగు నాయన్నను వధింపఁ దలంచుచుంటి. ఇయ్యది ధర్మమైనకార్యమా? దీనింజూచి లోకులుమెచ్చెదరా ? ఇట్టి మహాపాపకార్యంబొనరించుటంజేసి నాయాత్మ తిరుగ విముక్తిమొందనటవగటి ఘోరనరకంబునఁ బడునుగదా. ఓ చిత్తమా ! నీవెంతైనను దగినదానవు ? ఒక సమయంబున నగ్రిజనిఁ జంపఁ బ్రేరేచెదవు. ఒక సమయంబున మానుదువు. (ఖడ్గమును జూచి) ఖడ్గమా !

ఉ. సంగరరంగమందు ఘన ధీశత్రుజనాబుల నెత్తుటర్చి న

భయంగనమాచరింపుచును ధీవ్యయశంబునుగాంచుచున్నది

పుంగ్రుపఁ బూనకింతయును ధీభూమిని; నగ్రిజగూల్పనిట్లు నా

కుంగఁగు బోధజేసెదవె ధీకోవిచులెల్లరు దీని మెత్తురే.

అహా ! ఎట్టి కూరాత్మనకైనను ప్రాణివధఁ జేయుటకుఁ జేతుఁడవుకదా !

ధీ. జనకుండాయనునట్లు నన్ననిశముఁ ధీసావీరితోఁగాంచె; స

జ్జనముల్ బోయెడితోనఁ బొమ్మనెను; ను ధీజ్ఞానంబునార్జించుమా

యనిబోధించె; దుష్టకృత్యములనే ధీయంబోకుమఁచెప్పుడు

ననుదంశించెను; వీనిజంప నకటా ధీనాచేతు లెల్లఁడెఁకు.

ఈతఁడు నాకేమి యడకారముజేసినాడు. నేనే కూరకార్యంబులజేయుటఁజూచి దండింపనఁచుట దోషమా. ఈతఁడు నన్ను శిక్షింపఁ

దలంచినాడనునది సాకుఁగాఁ జేసికొని యీతనిని వధింపనా ? (ఆలోచించి కోపము దెచ్చుకొని) చంపకయున్నచో నకలభాగ్య భోగంబు

లును నాకెట్లవడును. రాజ్యమునకై యన్నదమ్ములతో నొకరినొకరు

వధింపఁ దలంచికొనుట వీరక్షత్రియ వంశాచారమేయై యున్నది. ఇ

ప్పుడు నేనూరకుంటినేని నన్నితఁడు చెరియందువైచును. పౌరులెల్లరును

నన్నుఁజూచి పరిహసించుటకు మార్గము గలుగును. ఏమైనను సోలే. పాపముగానిమ్ము. పుణ్యముగానిమ్ము. నే నీతనింజంపి సకలరాజ్యము ను వశముజేసికొని యిచ్చాలీలఁ బాలించెదను. (శయనింపుచున్న చిత్ర) సేనునిఁజూచి) ఇదిగో! ఈతఁడు సంపూర్ణ నిద్రావస్థనున్నాఁడు. ఈతని వధియించుట కిదియే మంచిసమయము. లోనికెవ్వరును బ్రేవేశింప కుండునట్లు చూచుచుండమని నాయనుచరులను ద్వారముకడఁ గాపుంచితిని. ఇంక నాకేవిధమైన భయంబునులేదు. ఇక నేవీరిలిని దీర్ఘాలోచనము సేయుచునుంటినేని యీతఁడు మేలుకాంచఁగలఁడు. అప్పుడు మోసమువాటిల్లును. (ఏడుటఁజూచి) మందిర పాలకుండగు బాధరు ఖానుఁడుకాబోలు మేల్కొనుచున్నట్లున్నవాఁడు. (పరికించి) లేదు లేదు. ఇటునుంచి యటు యొత్తిగిలినాఁడు నేనింక శీఘ్రంబుగ నాకార్యము జేసికొనుట మంచిది.

సీ. కరుణారసమ! నన్నుఁ ♦ గతినాత్ము డనబోక

యరుగుమీ! పుణ్య జ ♦ నాళికడకు

శాంతమా! దయఁబూని ♦ సంగ్రామ విశ్రాంత

లైన వారికడకు ♦ నరుగుమింక

సంతోషమా! నీవు ♦ త్కృపు వధానంత

రమ్మున నన్నుఁజే ♦ రంగరమ్ము

శృంగారమా! నీవు ♦ శీఘ్రంబుగాఁ బొమ్ము

భవ్యమతులగు దం ♦ పతులఁజేర

తే. గీ. యగ్రిజ వధింపనెంచితి ♦ నాత్మయందు

గాన నాయందు మీరలు ♦ గరుణఁబూని

యావహింపుడు నన్నును ♦ నద్భుతోగ్గ

రాద్ర వీరభయానక ♦ రసములార.

(చిత్ర) సేనుని సమీపించి ఖడ్గమును జూచికొని) ఓ ఖడ్గరాజమా!



తే. గీ. నిన్నుఁ బరమగురునిగాఁగఁ జేసకాని  
పగిది; ననుగన్న జనకునిఁ జంగి; మదినిఁ  
దలచి; హస్తంబునందె నిఁజాఁ దాల్చియుంటి  
నగ్నిజనిజంప వేగ సాయంబుగమ్ము.

(కత్తిచే జల్లేసేనుని కంఠమును నటుకుచున్నాడు)

(నిద్రాపోవుచున్న జాఫరుఖానుడు లేచి యిటునటు జూచుచున్నాడు)  
దుష్ట—అడుగో జాఫరుఖానుడు నిద్రలేచినాడు. నెమ్మదిగా  
నేనిచ్చటనుండి పోయెదను. (నిష్క్రమించును.)

జాఫర్—(వెళ్ళుచున్న దుష్టబుద్ధినిజూచి) కోకోకో. మాకీ  
సెల్వాతేకుడా లోపల్కివచ్చినార్. ఎవరదీ! పిలుస్తే మాటాడేదీ  
లేదు. (లేచి చూచి) హా. దుష్టబుద్ధి హ్యంకు కైకూ ఆయే. వో  
బడా మాదర్నోద్. దాడ్కక్తేక్యా. (ఇంచుకనడచి చచ్చిపడియున్న  
చిల్లేసేనుఁ జూచి) ఆరే! దుష్టబుద్ధి! బద్మాష్! దగుల్ గాజీ! కైసీ  
కాం కరేరేతూ! (అటునిటుజూచి, ఆరే! కామపాల! క్యాకక్తేరే.  
ఇటరారాబాబూ! మస్కీ కొంఘామున్గిందీ. జల్లీ ఆరే! జల్లీ ఆరే!  
(అటునిటు పరుగెత్తును.)

[కామపాలుడు ప్రవేశించును]

కామ—ఏమిటోయీ! సాహేబూ! ఈగందర్గోళము. పిచ్చి  
వారివలె బరుగెత్తుచున్నావేమి?

జాఫర్—గందర్గోళం యేమిటీవోయి. అంతాఅయిపోయిం  
ది. మనమహారాజ్ మర్గయేరే బాబా!

కామ—మహారాజేమిటి! మర్గయాయగుటయేమిటి? వల్లకాటి  
భాష నరిగా చెప్పుదూ?

జాఫర్—మనసీతర్సేన్ మహారాజ్కూ ప్రస్కాభాయీ త  
ల్వార్సేగర్సేన్ ప్రడాదియారే. అల్లా! ఈకోకంమే యెంతయెంతవాళ్లు  
ప్రడాత్. నాళి నిండా దుఃఖంవస్తావుంది.

కామ—సంగ తేమిటో తెలుపక యిట్లు గందర్గోళము చేసెద  
వేమి?

జాఫర్ —ఆరే! బుద్ధిలేనిమస్సి! నీకీ తెలిసేదేలేదురా? బాబూ  
మనరాజ్కు ఆడితమ్ముడు దుష్టబుద్ధి కత్తితో.

కామ—చంపినాడా యేమి?

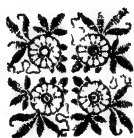
జాఫర్ —టీక్ బాత్ బోలే. సచ్ కతల్ చేసినాడ్.

కామ—అయ్యయ్యా! ఎంతమాట! ఇకమనగతియేమి? ఈ  
సంగతి మంత్రీగారికిని రాణిగారికిని నెఱిగింపవలెను.

జాఫర్ —ఆరే మాకీ రాణిమొఖంసూడడాన్కి మనస్సురాదు.  
మాకీ ఘండుకొనివున్నప్పుడు ఆ దుష్టబుద్ధి ముదిరగీ వచ్చి అన్నకు  
పోడిసినాడ్. మాకీ జిల్లా తెలిసేలో వాడ్కి పాణాల్ తీసి పాతిపెట్టే  
తో నిండాశాగుండున్. భాసి! తప్పిపోయింది. పాతిపోయినాడ్. కా  
ర్యం మించిపోయిందిరా, మస్కి అల్లా యిట్టరాశాడు.

(నిష్క్రమింతురు.)

ఇది ప్రథమాంకము.





## సంగీతకనకతార.

ద్వితీయాంకము.

౧౭౭౪

రంగిముః—చారుమతి చూడఁజూరము.

[చారుమతిని దలఁచుకొనిపచ్చచు దుష్టబుద్ధి ప్రవేశించును.]

(5) పాట.

చారుమతి—ఓరీ కూర మహాశైలికృత్య సోదర హత్యగావించి  
యిరీతినిఁ బంఖపెట్టి నికేమిదుర్బునిరా॥ ఓరి॥

దుష్ట—నారీశిరోమళి చారుమతి రమ్మ మారాడబోకు మరుబారి  
కోర్వము.

చారు—హరహరా! నియన్న భార్యనురా అరయగానికు నేనదెచురా.

దుష్ట—మరుప్రము మనపూర్వవరుస మీతిరిగాను మానిసికొ గలసి  
తీరెదను నమ్ము॥

చారు—(పరుగెత్తుచు) హా! ఎంతకష్టమొంతకష్టము. (భర్తను  
దైశించి)

సు. తనయున్, బుల్గిననన్ననువ్విడిచి ని ♦ ర్నాక్షణ్యతన్ బూనిహా!

చనినావే ! సురలోకసౌఖ్యముల్కై ♦ ఛండాలుడిఁ దుష్టబు

ద్ధిని వారించి, మదీయమానమిపుడ ♦ శ్చిన్ గాచుపుణ్యాత్మకుల్

గనరాఁరైరినిజేశ ! నన్నుక్రిపణ్ణ్ ♦ గానంగ నేతెంచుమా.

దుష్ట—గతించిన ప్రాణేశ్వరునిగూర్చి విచారించినచో నాతఁ  
డు మరల నరుడెంచునా? చచ్చినవానికై పలవించినచో నేమిప్రయో  
జనము ?

మ. తరుణీ! నివర్తిగూర్చినాడ; నికి జి ధ్రింబందుశోకించినన్  
మరిలన్ వచ్చునె; విక్కులేరెవరు నిన్ ధ్రింబాడ; నిప్పట్ల, నీ  
ధరణీ కాంత పరించెనన్ బతిగ; సం ధ్రింబంబునుంబాసి; ను  
సిర్గమోదంబునఁ జెట్టఁబట్టుముననున్ ధ్రింబంబునుంబాసనా.

నేనుతప్ప నీకెవ్వరును దిక్కులేరు. నన్నుఁ బూదినచో సర్వవిధంబు  
లను సౌఖ్యమందెదపు. ఇందులకు సిగ్గుచెందింబున సందియంబందకుము.

చారు—పాపము శమించుఁగాకి! శమించుఁగాక! అవివేకత  
చేత నిట్లు పనికితివి. అర్థరాత్రియందు నీయగ్రిజుండు నిద్రావస్థనున్న  
సమయంబున మందిరింబున బ్రేవేశించి వధించిన మహాపాపము చా  
లక నన్నుగూడ దలంపుచుంటవా? ఇట్లు పలుకుటకు నీకు నోరెల్లువ  
చ్చినది?

చ॥ జనకునితోడ గుల్మ్యుడను ధ్రింబనికంతము ద్రుంచివైచి, యా  
తన సతిపైన నన్నుగఁడు ధ్రింబానవాక్యము లాడుచుంటివే  
జనవిసమాననాదుగద ధ్రింబానవాక్యము నెంచినూసి స  
జ్జన ములుబోవుమార్గమున ధ్రింబానవాక్యము పుణ్యమబ్బెను.  
అగ్రినిభార్య తల్లిత సమానము. భర్తమరణంబునకు నాచిత్తమం  
తయుసంతాపమయంబు యున్నది. దాసికిఁదోడు నీవ్విడి కూరవాక్య  
ములచే నన్ను ముఁగితి కష్టపెట్టెదవేల? ఇయ్యది నీకు ధర్మము  
గాదు.

దుష్ట—ఓరమణిశిరోమణీ! ఈనీతులకేమి? ఈకలికాలంబున  
నియ్యవి పాటించువారెవరు! నేను నీయెడలఁ గాతన్యమువహించి పలు  
కుచుంటినని తలంపకుము. ఇయ్యది ప్రార్థనాపూర్వకమని తలంపుము.

చ॥ తలకరిమించు తీగగతి ధ్రింబంబు దళుక్కనినీవు ముంగలన్  
నిలువగ; గుండెరుల్లుమనె ధ్రింబంబు నీదగురూపవిలాస సంపదల్

కలికిరొ కాంచినంతటనె ♦ కాముడు దర్పముజేర్చినన్నును

నిలువగఁనీయకుండె; రమ ♦ గీమణి! సత్కృప నాదరింపవే.

చారుమతీ! నేను పరుండినుగాను. నాయెడల ౧౪ నిరాశ్రిత్యమున  
హించుట నీకు ధర్మముగాదా.

చారు—ఓయీ! సమస్తవిషయములును చెబిసిన నీస్థితిపలు  
కుచుగడుటకుఁ గారణము నూహించాలక యున్నాను. నీయెడల నొ  
క్కింతయు ద్రోహము జేసియెఱుంగఁడు నిన్నె పృథును గన్నకుమారు  
ని చందంబున నరసినాడు. దుష్టపథానువర్తివగు నిన్ను సత్పథంబునఁ  
జరించుమని బోధఁ జేసెను గాని మఱివియును నేయలేదు. అట్టి పితృ  
సమానుండగు సోదరునధించి, తల్లితోఁ నొప్పురాలైన, సమస్కరింపఁ  
బడదగినదాననై, వదిలెనగునన్నుగూడ గమకించెదవే?

ఉ॥ నిందను గొంగుగట్టకొన ♦ సీవీకుల బరిత్యజింపుదున్

గొందలపాటుఁ బూచికడు ♦ గొంతుదనగబున నన్నుఁ గోరునే

మందమతీ! బుధాగ్రీణులు ♦ మానససీమల గీనిజూచి న

న్నుం దలయెత్తనిచ్చెదరె? ♦ యోపుకొలందిఁవాల్లుబెట్ట రే.

మఱి! “కాముకస్య కుశోల్జా” యనెడు ముఠువు సత్యముజేసితివి  
కదా. చాలుజాలు. నీకు మంచిబుద్ధి దైవంబు బ్రసాదించుఁగాక!

దుష్ట—లన్నులమిన్నా! ఈమాటలతో నేమిప్రయోజనము  
న్నది?

సీ॥ నిన్నమొన్నటిదాక ♦ సీభర్త భుజపీఠి

దనరారియున్నట్టి ♦ ధరణికస్య

నాబాహు దండమ్ము ♦ ననునిల్చె; నిం

క నాయానతి ♦ నిఖిలజనులు

దలలదాల్చి నడచె ♦ దరుభక్తిజూపుచు;

సకలసామంత రా ♦ జన్యబృంద

మరిగావులైయును ♦ రతివనో నిజముగా

స్వల్పదు ముఖిలూప ♦ నింతియేని

తే. గీ. యృతేమూలం బానిసు ♦ సవనితలము

దాసిరిపులకును భయంక ♦ సంపదగుచు

నన్య మగుూడ నేవేల ♦ యాత్మయగు

సందియంబును బాంధవం ♦ ముదరదన.

నాయక బాధ లేనే విభాబుల జూచినో యన్య నేనుగూడ నిన్ను జూచెదనని తలంపును.

చూడు—నీ ! నీవరే ! ఇట్లహుము బాధితువును సేనాలుక వేలుచీలికలు గావలసియున్నది. పరాగిణల నయనెంచుట మహాపాపంబు నగు నోనకు గాబోలు.

శా. లేనేవెను సుబుద్ధియెడన్ ♦ తేముచునే గుంపురిన్  
వారింజీరన్ ధృమాన్వనితత్వ ♦ వాంఛిపహ్ని కానిచో  
రారూలే నిరునవ్వినదల నొన ♦ ర్పిన్ నష్టచిత్తుడవై  
యూనిశ్చిన్ నను గూడగాడలెనువే ♦ నీనో ! ములధ్వంసకా.

ఓయీ స్వీయ మణినివదిలించి శాంతింబుబూని నేనచిలుచు వాన్యంబుల నాలించి నానాభులను రాసుము సోదగవధచేగలిగిన పాపము జూచును. ఎన్నితేల బద్ధులైనా నొకరు మన్ని విషవగు. స్వామిలు యెంచుట సేమాయలుచు దుష్టములును బంకిరావు.

నష్ట—తరుణ !

తే. గీ. ఎట్టిమాయలం బర్చున ♦ నేమిలాభ  
మెన్ని తంత్రములైనెన ♦ నేమిఫలము  
తరుణి నినుగూడి సౌఖ్యమం ♦ దంగలేని  
జన్మనిష్ఠయోజనముగాదె ♦ క్షౌతలమున.

చ. పలుకులువేయునేల విను ♦ వైదలిసీపలు మోహముగనుట  
దెలిపితి మోహమావగను ♦ నేరకయుంటిని; మన్నధుండుపూ  
వులశరముల్ మహోగ్రతను ♦ బొచివోయోగము నేయును డెడి  
గలియుము నన్ను వేటుగతి ♦ గానక పూనుధాకరాననా.

మ. ధరణీభారము నేవహించితిని దో ♦ గ్రర్పింబు దీపింపగా  
బరిపాలించెద నెల్లవైరులు భయ ♦ భాగతాత్మకావస్థ;నన్  
గరుణాదృష్టిని జూపమామనుచున్ ♦ గాంక్షింపుచున్నాడనో  
యరవిదానన గరివిపుము మనో ♦ క్షాంతి సక్తీడల్.

(6) పాట.

కట్టాకరినాత్మా గణియింపవె ధర్మాధర్మములన్ || కట్టా  
ఎట్ట ఘోరకృత్యములైనన్ | సల్ప నొడిగట్టతివే  
తుట్టతుదకు అదిచాలక ని | గొప్పబుద్ధినాపలుజూపన్ || కట్టా ||  
మెట్టట్టో పతివధ్యకై మదిచింతలు చాలి చేతి కట్టి  
బట్టవచ్చి యిటులన్ గని బల్కవచ్చునా తగునా || కట్టా ||

చారు---భీ! దుష్టచరిత్రుడా! ఎంత చెప్పినను నకు బుద్ధితేకి  
న్నది. సోదరుని హింసించి, తద్భార్య నవహరింపక దలంచిన దో;  
వగు నిన్ను భగవంతుండింకను భూమిపై బ్రతుక జేసినందులకుఁజి  
తంపుచున్నాను. నే నెంత చెప్పినను నీబుద్ధిని మాటలించుకొనకుంటివి.  
స్వకాంతపై నీచిత్తము జేర్చియున్నచో నీవీదూషణాబునకుఁ బాత్రుం  
డవుగదా! నానాధుండు గతించెనుగదాయని నిర్భయాడనై యంతః  
పురంబుఁ బ్రవేశించి యిట్టి కాటుకూతలఁ గూయుచుంటివా? నాకెవ్వ  
రును దిక్కులేరని తలంపుచుంటివా. నీపాపబురతయుఁ బరమేశ్వరుండు  
వీక్షింపుచుండుటలేదా? వావివలుసలులేక యిట్లుగోరుటకు నీచిత్తమె  
ట్లు సమృద్ధిఁజినది? పరాంగసారతి మాచరింపదలంచి రావణు  
డు---కీచకుండు మొదలగువా రేమిఁగో వినియుండలేదా?

దాష్ట్ర—సీమగతిసీవతంసమా! పురాణగాథలన్నియుఁ ద్రోక్ష్యద  
వేల? అవియన్నియుఁ గన్నులతోఁ జూచినవారెవరు?

చారు—ఛీ! నురాత్మా! (పండ్లు కొఱుకుచున్నది)

దాష్ట్ర—

మ. ననుపీక్షించిన మోముదిగ్విప్లుటమరి ♦ న్నామాటనాలించినన్  
గనుబామ్మల్ ముడివేసి కన్నులమహో ♦ గ్రింబైనదృష్టిననున్  
గిరుకన్ జూచుచుఁబండ్లు నొక్కుచుమదిన్ ♦ పిక్షింపగానేల; య  
ల్కనునడంగదె, పేతనైనయెడలన్ ♦ గంబాస్తువాంపవే.

(సమీపించుచున్నాడు)

చారు—దూరముగానుండుము. వినాశకాలంబునకు విపరీత  
బుద్ధులుపుట్టుచుండును. సంతానవత్తిలై, నీయగ్రిజనకు భార్యనై, నీకు  
మాతృసమాననగు నన్ను గవయుటకు సాహసింపుచుంటివా? నిబుద్ధి  
కాలిపోను.

దాష్ట్ర—ప్రేయసీ! నీదూషణవాక్యింబు లన్నియు నాకుభూష  
ణంబులునుమీ. కోపించిన యువతులే తుదకుఁ గృపజూపుదురు. (స  
మీపించి) సఖి! అలుకమాని నీకృపావర్షధారఁ బటపుము. సంశయి  
షకు. ఒకవేళ నే నీరహస్యమువెల్లడిఁ జేయుచునేమోయని శంకిం  
నలదు. నే నెప్పుడును నట్లు చేయువాడనుగాను. రమ్మ. నాకోరిక.  
దీర్పుము.

(మీదికిఁ బోవుచున్నాడు)

చారు—(కోపముతో)

మానిని.

ఎందులకిసతి నిందనుబొందఁగ ♦ నీక్రియ నన్నును గోరెదురా  
పంద! పరాంగన లందఱు దల్లుల ♦ భంగిని గాంచవలెం గదరా  
యెందఱుజచ్చిరి నీవలెగోరుచు ♦ నింతుల; భూమినినోతులువా  
డెందమున్ దలపోయకొకింత క ♦ డిందిననుగవయన్ దలఁజే



ఛీ! ఛీ! దూరముగనుండుము. దగ్గిఱకురాకుము, ఇష్టములేనివారిని గూడుట యానలుమొగంబుల వేల్పునకైనను తరముగాదు.

(7) పాట.

ప॥ చారుమతీ నీనీతులు గీతులు చాలించి చూలించు॥ చారు॥

అ॥ ప॥ కూర్చుండై నాయెడ మాయంపు టీవోముగా తనబాణము విడుచు.

సారెసారెకుఁ | సరసమెరుగకఁ | బాధించుచుండె భరింప జాలక.

నారీదయాళి నాభాధన్ తొలగించుము నికగుపుణ్యంబు॥

దుష్ట—అలివేణీమణీ! నేనంతవరకును నీమనస్సు కలుగునే మోయని శాంతముగాఁ బల్కుచుంటిని. మంచితనమూహించి యింత వరకునుఁ గాలహరణంబున కోర్చితిని. నీవు సంకోషపూర్వకంబుగా నాకోర్కె దీర్చినచో మంచిదే, లేనిచో—

గు. ధరణీరాజ్యము బోవనే; మణియుఁ గాం ♦ తారత్నముగూడ నీ గురువుల్ బంధులు సజ్జనంబులుగడుక ♦ గోపిప నీ; ఓతులు బరిహసంబానరింపనీ; తుదకు ద్రా ♦ వ్యంబంతయు బోవనీ తగుణీ రత్నమ నిచ్చుగూడకక నే ♦ దాళంగ లేవంతయున్.

బలవంతముగనైన నాకోరిక దీర్చుకొందుఁగాక, నాకు శ్రమకలుఁగజేయకుండ నీవేసస్సుకొంచినచో నుభయులకును శ్రేయస్కరంబున, సంకోషకరంబునై యుండును. ఇందులో నీయభీష్టంబేదియో సత్వరముగఁ జెప్పుము.

చారు—ఛీ! కులపాంసనా! తులువా? బలవంతమున నచ్చు బట్టెదవా? నాదేహంబునఁ పాణింబులున్నంతవరకును నీవట్టియకార్యము సేయజాలవు. ఒకవేళ బలవంతుండవై చేయజూచినను దానివలనఁ బ్రయోజనములేదు. అయ్యది నాకుమరణంబుగూర్చునని తలంపును.

(కోపమున) ఛీ! దుష్టచరితా! ఇంక సింహ సంభాషింపరాదు.

(వెళ్ళబోవును.)

మృష—తరుణీ! నీనెచ్చటికి బోయెదవ్ర? (హట్టకొనబోవును.)

చారు—(తనలో) హా! భగవంతా! వాసుదేవా! నాకెట్టి గవ్వంబులగూర్చితీవి. నానాధునిజంపి, యాయగ్గాస్తుండునన్నుఁజేపట్టఁ దలంపుచున్నాను. సీతపు నాకుశరణం బెవ్వరును లేరు.

మ. బలదాశ్వాసనుఁడ సభాతలములో ♦ నాశాపదీదేవికి

శుభల విప్రుచువేళఁ గృష్ణ! యనుచున్ ♦ బద్ధాక్షిపాక్షింపగా

విలసవివృకటాక్ష వీక్షణమునన్ ♦ శిఖాస్థిమానంబుచున్

నిలువంబెట్టితిపిప్రు ముద్దగిముఁజున్ ♦ మెచ్చున్ యశోదాసుతా.

తండ్రి! ఈమరాత్ముని బానిసుండి నన్ను రక్షింపుము.

మృష—వెళ్ళిదానా! అట్లు రక్షించువారును, రక్షింపఁబడు వారును నీకాలంబున లేరు. (ఇచట యూరకూడి తనలో) నే నంత గాఁ గోరినను, భయపెట్టినను నాయభీష్టాబు దీర్చుట కీయశివ సమస్త తింపకయున్నది. కాఁమ్మ. (నేనునిం బించి) ఓరీ! సేవకా! నీస బాలఘాతమనియొక్క కిగ కను రయంబునఁ గనకవర్మ తారల నిటకుఁ బోడ్కొనిరమ్మని మదీయాగ్గాఁ దెలుపుము.

సేవ—చిత్తము. (నిష్క్రమించును.)

చారు—(తనలో) కనక సేవ తారలను నిటకురప్పించుచున్నాఁ డు. వారియెడల నీతిదేవి కుర్రకార్యంబు గావించునోగదా! (భగ వంతు నుద్దేశించి) హా! వాసుదేవా! నీవే దిక్కని నమ్మియున్నాను.

(8) పాట.

ప॥ శ్రీరమేశా యోచిద్విలాసా కేశాక్షీరసాగరా శయనా॥ శ్రీర॥  
ల॥ ప॥ కూర్చుండు దుష్టబుద్ధి నాముందు ఘోరంబుగ పతింజంపె॥

మారంబాలోచింపకనన్ గోరెను ఈ యేరితిన్ | యీత  
రిన్ | బోచెడవో

దేవా గోవర్ధన మందరిగిరిధర దేవనందనా బోధివవే | జ్ఞా  
పతిన్ | యిపుడారీతిన్ | గాముగ్ధ యీకూర్పున్ | భాధ  
నునన్ | తొలగించి రక్షిమి

దక్ష—రిమణి! ఇప్పుటికి న నరసింహుడనుగొనికొందువా  
చారు—పాపీ! అప్పుడెక్కడ నున్నాము.

దక్ష—అట్లనా! మీరు దూరముననుండి బాది తీరెదను.

[కొంతదూరము తొలగిపోయెను.]

కనక— }  
తార— } (తల్లిజూచి సమస్కరించుచున్నాడు)

చారు—వత్సలారా! మిమ్ముల పోషించిన నాకు మిగుల శోకం  
బుగలుగుచున్నది.

శే. గీ. నలయు కోర్కెలదీర్చి జే ♦ వములకంటె

నెక్కుడుగజూచు మీతొడ్డి ♦ యేగినాడు

పృథ్విశాసి శోకమునుగూర్చి; ♦ పిశ్చవిహీను

లైన మిమ్ముల నేనెట్లు ♦ లరయగలకొ.

తండ్రిలేని బిడ్డలారా! మీయవస్థకు నేనేమి పగతును.

దక్ష—(చారుమతిగజూచి) తండ్రిలేని బిడ్డలారా! నీవిషయము  
నీవు చింతింపవలదు. నీనాథుడు నిన్నును, మీని నెట్లరిసి రక్షించెనో  
యట్లే నేనుగూడ జేయగలవాడ నమ్ముము.

ను. తరుణాంభోజదళయతాక్షివిమలా ♦ తద్భంబు నాపల్కులన్

జరకాలార్జిత రాజ్యవైభవధన ♦ శ్రీలెల్ల నీపుత్రుడే

పరిపాలింపగ నీవెమాచెడన; నా ♦ వాక్యంబుఁ బాటించి న

త్కరుణన్ నాదగ్గకోర్కెదీర్పగదవే ♦ తన్వశిరోరత్నమా.

చారు—(కోపముతో) బేరా! తులువా! నీసాహసంబును మానవ్రగదా! నిన్ను కాష్ఠాబుపైఁజెట్టి దహించునంతవరకును గూడ నీబుద్ధి మాననోలున్నావు.

దుష్ట—నివిష్టప నాకు సాపూర్ణంబుగ జిక్కియున్నావు. ఇంక నీమెదుల కరుగగలవు. (పట్టుకొనబోవును)

చారు—అంత సాహసంబు వలదు. కొన్నాళ్ళు బ్రతుకదలం చితివేని బుద్ధి మఱిించుకొనుము.

కనక—(దుష్టబుద్ధినిఁ జూచి) వినతండ్రి!

తే. గీ. ఎవ్వరిని నెన్నఁడైనను ♦ నొవ్వనాడి

యెఱుంగనట్టి మాయమ్మపై ♦ నింతకినుక

బూస నేటికిఁ జెప్పమి ♦ పూర్ణకృపను

జులఁ బోగొట్టుమి ♦ మాకు స్వాంతమందు.

తార—భాబయ్యా! నీవు మాకుఁ దండ్రితో సమానుడవు. మాలమ్మచు కోపించెదవేల?

దుష్ట—(తనలో) చారుమతి నాకోర్కెఁదీర్చుటకంగీకరింపదు. అయినను చివలకు జాపనుకొంచినచో సమ్మతించునేమో చూచెదగాక. అప్పటికిని సమ్మతించియెడల వీరినాదరించి జూపివేసెదగాక. కనకవర్మ తార లూపుట యెప్పుడైనా నాక సాయమే. (ప్రకాశముగా కనకవర్మకుఁజూచి) కనకవర్మా! నిన్నును మీచెల్లెలను నిటకు రప్పించిన కారణం బేమియో తెలియునా?

కనక—తెలియదు.

దుష్ట—తెలియదా! నేను చెప్పెదను. మిమ్ముల నిరువురను జుట్టుకే. అంతకుఁ బుత్రముక కార్యమేమియును లేదు. (ఖగము యోచించుండి బీయుచున్నాడు)

చారు—(తనలో) అక్కటా! మహాత్ముల కెంత సాహసమున కొడిగట్టుచున్నాడు (దుష్టబుద్ధినిజూచి) ఓరి! ఇదివరకెన్నియో మహా పాపకార్యములు లాచరించితివి. ఇప్పుడిది పసికూనల జంతువు కేలసాహసించెదవు? దీనివలన నివందు బ్రయోజనము జేసియున్నది.

దుష్ట—ప్రయోజనముండుటచేతనే (కనకవర్మని జూచి) రమ్మ; కనకవర్మా! ముందుగా నాభిష్టమునకు సిద్ధులగుచున్నాడ— (ఖడ్గము నెత్తుచున్నాడు)

తార—పినతండ్రి! మా యన్నను జూపవలదు. నన్ను జంపుము.

దుష్ట—తరువాత నిన్ను (కనకసేనునిపై కత్తి నెత్తుచు)

చారు—(దుష్టబుద్ధినిజూచి) దుష్టశీలా! దుర్మార్గవృత్తియందు నన్ను బ్రవేశపెట్టి త్వకై ప్రయత్నింప కేనందుల కియ్యకొనకుండుట జూచి, యీదెఱంగుఁగూహించితివా?

తే. గీ. బాలు, సుకుమారు, సుగుణాల † వాలు ‡ వి

శాలు, శశిబింబవదను, లే † శంబుకగుణ

బూనకి ఖరాసిచేత ని † పుడమిఁగూల్పు

జేతులెల్లఁడు సీకునో † చెనటో వినుము.

‘పార్థ నాపూర్వకంబగు నావ్యాకంబు లాలించి ఓరివి విడువుము.

(9) బేహుగురాగము ఎకతాళిమ.

ప॥ పితృసమానుడవు మరి పినతండ్రివిగద ప్రేయమున ముముగను  
మయ్యా దయలో మా నుడివినుమయ్యా

ల॥ ప॥ పుత్రులమగుదుము శత్రులభంగి పూర్ణాగ్రహమున గాం  
న॥ పితృ॥

ఏత్తుహీనులుగా మముచేసితి వదిచాలదా పుత్రుడుఁఖంబు  
నాజననికి మరల సంకల్పింపనెంచితివా॥ పితృ॥

ధాత్రినెంచెన నిన్నుదలంచి । అన్నపుత్రిలను అన్యాయంబుగ  
వధించిన నచే॥ పిత్తు॥

తార—పితృసమానా ! నియన్నబిడ్డలమగు మమ్ము గాపాడు  
టకు మారుగా నీఖడ్గంబునకు బలినొసంగఁదలంచితివా! మేము నీకేమి  
యపకాగము చేసియుంటిమి. మహాకౌగ్ర్యముబూని మాతండ్రిని వధి  
యించి మమ్ము బిత్పవీహారులుగా జేసితివి. అది చాలదా!

కనక—అయ్యా! మాశక్తికిదిసాగు భర్తృశోకంబుగూర్చితివి.  
ఇంక బుత్తశోకంబుగూడఁ గూర్చఁదలంచితివా?

తే. గీ. పతివియోగమునకె తన ♦ భావమందు  
మిగులఁగూచుచుఁ గృశియించి ♦ నెడుచున్న  
జనని యయ్యదికూడ దాఁ ♦ గనయ్యె  
బ్రతుకగలదె డహమున జి ♦ పములదాల్చి.

(కొడుకు నుద్దేశించి)

చారు—హా! కొడుకా! నీకెంతయవస్థ తటస్థించినదిరా.

తే. గీ. అన్నకొడుకంచు నొక్కతాత ♦ యరయకుండ  
జన్మమున గృహనితయు ♦ జేర్చిరూడ  
కలుగుగట్టిఁ గలరాబు ♦ నఱుఁబోవ  
గాంచుచుంటిని కన్నులు ♦ కాలిపోవ.

దుష్టబుద్ధి! నామాటలవినుచు. వీరుగాని నేనుగాని నీకేవిధమయిన  
దోహంబును జేసియుండలేను. అట్టయెడల వీనినేల యకారణంబుగఁ  
జంపనెంచెదవు?

తార—(దుష్టబుద్ధినిజూచి) తండ్రి!

చం. కనులనీరుగాఱఁ గొడు ♦ కా! కొడుకా! యి యేప్పుచున్నమా  
జననినిజూచియైన మము ♦ సత్కృపఁబోవుము వేడుదాన; నీ

మనమునశాంతి జెగవమిక ♦ మానసమును భయంబునోచెడిక  
ఘనయశస్వినీగహస్తమున ♦ గాంచిన యంత నె మాగు వెలయున్.

దుష్ట—ఇట్టి దీనానాపంబులకు చుట్టబుద్ధి చిత్తాబుకలుగను.  
(కనకవర్మను జంపబోవును.)

చారు—

మ. తనయుడొక్కఁడువంశమున్ నిలువఁగా ♦ ధాతృస్థలిఁ గాంచితిన్  
ఘనకారుణ్య కటాక్షపక్షుడ నుధా ♦ కిల్ల'లపాథోధన్  
గని రక్షింపకయిల్లు దగపుటర్నుకై ♦ గాక్షిం చెదేలా! మనఁ  
బుననూహింపుమొకింతమంచితనమున్ ♦ బుద్ధ్యాబు సో బైడిక.

దుష్ట—నీవా! నాకోరిక నంగీకరింపకయుంటివి. మనయు నీక  
నక పాలుడు బ్రతికియిన్నచో ముందెప్పుడయిన రాజ్యవిషయమైక్లొల  
ముప్పును. తనతండ్రి రాజ్యమని నాపై నెప్పుడయిన గత్తిగట్టాల్తుకై  
తలంచును.

చారు—హరిహరీ! ఇందులకా నీవీపసికూనల జంపదలంచికొ  
సోదరునిజంపి సమస్త రాజ్యమును నియోగము చేసకొంటివి. ము  
గ్ధిలందఱును నికధీనలైయుండిరి. ఇక నీతఁడు నిన్నేమిసేయును. పసి  
కని కంతసాహసముగూడఁ గలుగునా? పోనిమ్ము. సకల్యయనుమాన  
మున్నచో మేమందఱుమను నెందేసి యీపురుషుల విడిచిపోయెదము.

దుష్ట—(సమీపించి) ప్రేయసీ! నాయభీష్టము నీప్రదర్శితివని  
యిదియంతయు నవసరములేదు. రమ్ము. నాయభీష్టగబుదీర్చి పుత్రపు  
త్రికలతో సౌఖ్యముననుండుము. (మీదికిఁబోవును.)

చారు—దుష్టీలా! ఏమిరా! నీపొగుగుఱుతనము. (తప్పిం  
చుకొనుచున్నది.)

దుష్ట—ఇంక నీవెన్ని చెప్పినను నిన్ను విడచువాడనుగాను.  
(మరల పైకిఁ బోవుచున్నాడు.)

చారు—జౌరా! పలుగాకీ! ఎంత చెప్పినను వినకుంటివి. (పరుగెత్తును.)

దుష్ట—ఎక్కడికిబోగలవు? (వెన్నంటి పరుగెత్తును.)

చారు—(భర్తనుద్దేశించి) హా! పోణేశ్వరా! నీవున్నచో నాకీయిక్కట్లు రావుకదా. దుర్మార్గుడైన నీసోదరుండు నాకు మానహాని గలుగఁజేయుఁ జూచుచున్నాడు.

తార—(దుష్టబుద్ధినిఁజూచి) పినతండీ! మాయవ్యుడేల యీ రీతి బాధపెట్టెదవు? రక్షింపుము.

దుష్ట—(మరల చారుమతిని వెంటఁచును.)

చారు—(పరుగెత్తుచు) హా! నాకింక నెవ్వరును నష్టపడువారు లేరు. భాగీరథిమహాదేవియే శరణంబగుఁగాక (పరుగెత్తుకొని పోవుచున్నది.)

దుష్ట—(పరుగెత్తి నిష్క్రమించి వెంటనే ప్రవేశించి తనలో మహాసాహసముబూని యీనాతి నాకందక నదింబడబోయిన కానిమ్ము. ఇదియుమేలే. (ప్రక్కందిరిగిచూచి ప్రకాశముగా) ఓలే బాలఘాతకా!

బాల—(ప్రవేశించి) దేవా! ఏమిసెలవు?

దుష్ట—నీవు కూర్చుండునుగలిసి కనకనర్మతారలను నరణ్యంబు నకుఁ గొనిపోయి వధించిరండు. పొండు.

కనక—తండీ! నీవు.....

దుష్ట—మాటలాడవద్దు (నిష్క్రమించును.)

బాల—(కనకనర్మనుజూచి) రంప.

\*(కనక సేనతారలను దోడ్కొనిపోవును.)





రంగము:—చదవకము.

[ప్ర]వేశము:—పల్లెనాయకుడు, వీరము, లచ్చిగాడు  
మొదలగు పల్లెవాసులు.]

(10) పాట. ఫణిరాము ఎరితాళము.

ప|| రారాపోదాము న పలనేగాని రారా||

అ|| ప|| యిరిగిగా పేరిగా లచ్చిగా పంకినో గారా

యిరిగివర్సనూడు యున్ననగలుగిది గారా

ఓరిగి నూడు నూడు మజ్జేసిదావద! రారా

మారెమ్మక్కకి మనహిదనయక్కె యిరిగి మబ్బుపట్టించె  
కరుణించి! రారా

పల్లె—ఓరియారా ! ఇయ్యాలలో నూ బాగుందిరా !  
నూడు. మజ్జేసింది. వలలకు శాపలు బాగా సిక్కితాయి.

వీర—ఏంపట్టినా మనలచ్చిగాడ్డాలి. ఈడు నిన్న మచి  
పుకుండానే శాపలట్టడానికివచ్చి రాత్రింతా యిక్కడూ మానో  
శాపలట్టి రాజుగారిదగ్గరకు తీస్కెల్లితే రెండు వరాలిచ్చారట.

లచ్చి—నాకొచ్చినది యెదుకేసుస్తావు? నువ్వెక్కడూ ను  
నూల పట్టరాదూ?

వీర—సూస్కిశమామా ! ఇయ్యాల లోను చచ్చి మొదల  
ట తివి బట్టుకొంటారో!

పల్లె—ఒకే. ఏంటున్. ఈ వల్లమాలిన మాటలు. వలల  
పన్నంజోన్.

(అందఱును వలలు నదిలోనికి విసరుచున్నారు.)

పల్లె—మాసెడ్ల సలేస్తుందిరా. మచమాతా! తిసి యేదన్నా  
పాడుకొంటే యీ ఫలిబాధపోతుందిరా. వీరా! కానియ్యరా !

వీర—చక్కానిచిన్నాది-యేలేలో-నాపైని మక్కువగొన్నదీ-  
యేలేలో! (అందఱుచుగలిసి) చక్కానిసిన్నాది యేలేలో - నాపైని  
మక్కువగొన్నదీ - యేలేలో !

పల్లె—మాదొడ్డిపాట తీశావురా, తీయండి. వలలు. సూస్తారే.  
(నీటిలోవేసిన వలలుతీసి) వీరా! లచ్చిగా! సూడరా! నాతమామా!  
నావలలోకి యెక్కిటి నీటివాలుగ పడ్డదో. (వీరకు వలజూచి) నీవల  
లోకి అన్ని సిన్నసిన్న శేపలే. ఏదిరా! లచ్చిగానీవల. చికుగూడా  
మంచి పెగిమీరు పడదిరా. అద్భుతం. నాశాప బుట్టపట్టగోస్. ఒక్క  
నవుచి దొబ్బెయ్యమూ. తామెత్తుపెత్తునోస్. (అట్లు సేయుచు  
న్నాడు.)

వీర—మల్ల! సూస్తు కూసుడారెనుకు. వలలుచుట్టియె  
య్యకి.

పల్లె—లచ్చి—(వలలు వదిలి వేయుచున్నాడు.)

[పల్లెవారమున్న సలమునకించుక దూరముగా  
చాగుచుతి ప్రివేళించుచున్నది.]

చారు—(తనలో) అక్కటా! ఆకుర్మాగంపగు దుష్టబుద్ధి  
యొకటి సాహసకార్యము సేయఁదలచినాడు. ఇట్టి గతించినను,  
పుత్రుని పుత్రికను సూచకొనుచు శోకించుచున్న నన్నాడు  
ర్మాగం శ్లోసంకటము పాలుజేయఁబెంచెను. ఇక నేను జీవించినందు  
వలన బ్రయోజనమున్నది. నేనువానికంటెకు గుపక్షిని నేనిబలవంతము  
నైన వానియభీష్టము దీర్చుకొనక మానరాదు. కుర్మశ మంచుటకన్న  
మరణమే మంచిదికదా.

శే. గీ. ఇట్ల తమ్ముచేతఁ గూ య్పంగఁబడియె

విజ్జలమజంప వనికెఱుం యింపనెంచె

నవ్వడిగాక పాణముల్ † నేనుమేన  
దాల్చి జీవించుదానను † ధరణియూను.

(కనకవర్మను నుద్దేశించి) తాడీ! కనకవర్మా!

సీ. నిను బాణములకింక † చుక్కలజూచు  
చుండి యెప్పుడుగాను † కూడ; నీకు

భంజే, తనకును ను † భాబుచు నూహించి

చిరునివాసము † శేరి; యుక్తి

నయనువచ్చినయెడ † భాగ్యగాంధ్యకూ †

కలుగుచున్నది † కలుగుచు

సకలసామంతరా † జ్యోతిషులు నెఱు

దలలు నెఱవలె † దలనెయున్న

తే. సీ. భవ్య భవదీయాజనకూచు † పాణములు

విడి సుఖోకముచున్నది † వెనెనినాను

తాడీ! చిచ్చిగడ నెచ్చరి † ధరణియూను

గాననా దుష్టకుల † కరుణలూ.

(తాననుదేశించి) కుమారీ! తారా!

తా. భవ్యశ్లాగులుచెరువారడ నిక † తస్య శిరోరత్నము.

గన్యావాసము వేసియెక్కడ వే † గదా హస్తలబ్ధులు గా

జన్మల్ మోదమునందఁగాననుచును † స్వా లింబునందెంచు నా

జన్మశ్రీనిధి నీకుతొగ్గి యకటా † స్వర్ణము జేరెనదా.

ఇంక నేనును దుష్టబుద్ధి కారణమున బాణములు జాయచుంటిని.

ఇప్పుడు తల్లిదండ్రులులేని మిమ్మెవ్వరు రక్షితురు? (దుష్టబుద్ధిని

దలంచుకొని) అక్కటా! దుష్టబుద్ధి మనయెడల సాతకౌర్యము

నూహించినాడు.

సీ. అన్నబిడ్డలటంచు ♦ నాత్మలోపల వెంచ  
 డాయగా తన్నెంతో ♦ డాసివేడ  
 పసిపాపలనుజంపఁ ♦ బాపమంచునుదోచ  
 డాయగాఁ డాయగాఁ ♦ దలచెగాని  
 పరకాంతలనుగోర ♦ బాపం బూచును  
 దోచదే దుర్బుధు ♦ పోచెగాని  
 తన దుష్టకార్యముల్ ♦ జనులెల్ల సగునరం  
 చెంచడే దర్శించు ♦ మించెగాని  
 షే. గీ. కట్ట! గుష్టబుద్ధిగొనిది ♦ కలుషమాచు  
 సాహసముబూని వచియించు ♦ సజ్జనములు  
 లేరే! నగరింబునందున! ♦ లేకయుండి  
 రా మిగుల క్రూరుడొందును ♦ రాగుగాని.

(ఇంచుక యూరికుండి) ఇప్పుడు నేనింతగా విలపించినందువలన బ్ర  
 యోజనం శేషమయ్యింది. ఇక నేనీభాగీరథింబడి సుఖమటయే మీలు;  
 కాని నావార్త నాబిడ్డల కెవ్వరెఱింగితురు. కానిమ్ము! ఈ గంగాభ  
 వానినే వేసుకొందుగాక. (నదిజూచి.)

సీ. గుష్టబుద్ధియనెను ♦ మర్కటకతమునఁ  
 దమతొడ్డినిబాసి ♦ తనరుచున్న  
 పసికూననునీడి ♦ భయమొది మానహా  
 నికి; నిప్పు నినుజేరి ♦ నేనుగూడ  
 తనువుగోల్పోవఁగాఁ ♦ దలచియుంటిని; నిట  
 ననుజూచి హోరుహోఁ ♦ రనుచునేడ్చు  
 నీవుగాకనుదిక్కు ♦ యెవ్వారలునులేరు  
 పుణ్యవాహినివంచుఁ ♦ బాలుపుమీఁ

తే. గీ. సకల జనములపొడయ ♦ శంఖులగన్  
నిన్ను విరుతింపఁ గలమాతె ♦ లిఖింపఁ  
జనని; నామొలనాల్గిని ♦ స్వర్ణము  
నాదులుల రేగి పు ♦ నా చాచి  
కిరునిక్కి తదాద్ధ ౧౦ ♦ గాభవాని.

పల్లె—ఒకే 'పిగడూ' అడొట్టెను. అటునూచి, యెవరో  
అమ్మోరు నది మి కొచ్చునో. తానమాపడొనికి కామోసు.

వీర—ఒరలుతే నుచకాసె దుకేక్. మనశా పలగోలనునం  
నూస్కుదాము. వలదడేస్. యేరా ' అచ్చిగా మొగిలానూత్తు.  
యియ్యాల కెల్లాగినునా ఓవరాసామ్మ కొంకరి ఓ కల్లకపోతే నీపె  
ల్లాము చూకి మాపెడిది. నీపురుచ్చుకొని అదేబాదలు మొదలెట్టది.

చారు—అలోచనయేల. వెళదానని నావార్తి బిడ్డలకెటం  
గింపుమని యింగులను వేసుకొనుచుంబి గొని, గుప్తబుద్ధి నాబిడ్డ  
లను మాత్రము బ్రగి కనిచ్చునా? ఇక చేరుదులడెదను. (చేతులు  
తోడించుకొని.)

తే. గీ. అమ్మరో! ముంగజన్మకు ♦ చననాకు  
జన్మసేచుడె సతిగాగె ♦ జేయుమమ్మ  
నన్ను నీలోగలల్పుకొ ♦ నగదమ్మ  
కరుణబూనుమి కవిజ ౧౧ ♦ గాభవాని.

(నదిలో బడును.)

పల్లె—ఒకేయి! కొంపమునిగిందిరోయి. అడొట్టె అచుకొ  
న్నాను, ఆ యమ్మోరు నదిలోబడ్డది. మీరిక్కడ పుంకుండి. నావల  
వేసి ఆయమ్మను తీస్తాను. (వలదీసుకొని పరుగెత్తి చారుమతిపడిన  
స్థలమునవేసి యామెను దీయుచున్నాడు.)

చారు—(తనలో) చావలెననుకొన్నను కావలసినప్పుడది

రాదని వెదలు చెప్పుదరు. అయ్యది నేడు నిజమైనది. ఈపల్లెవాడు నచ్చేటికి దీసనాడు. ఇకను భావతుడు నన్నెట్టిప్రముల పాలుజేయఁబలంబు యిట్లెఱ్ఱినాఁడు.

పల్ల—(చారుమూనిజూచి) అమ్మోరూ! మీరు ఆయాసం తీర్చుకోండి. భయంలేదు. సూస్తుండగానే యిందులూ పడ్డావెందుకు బతకడానికి యిట్టేలేదంటమ్మా.

చారు—నామనా! నీవెవ్వరంటే. దేహముపైరోసి నదియందు బడిన నన్ను బ్రదికినాతివేల?

పల్ల—సత్తూవుంటే నూచి పురుగుంటానా! ఎంతమాట. (ఇరుకయూరకుండు) నీసంగ తోట? యిరుగుో యెందుకుపడ్డావంటే కూతసెప్పు.

చారు—టక్కాదాతా! పల్లనాయకా! నేను పాండ్యదేశపు రాజైన చిత్రసేనుని బాంధవు. నానాథుని శత్రునితమ్ముడగు దుష్టబుద్ధి వధించి నన్ను గొప్పములపాలుసేయఁదలంప, నేను బ్రదుకుపైరోసి యీనదిం బ్రవేశించితిని. నాబట్టలనుగూడ దుష్టబుద్ధి వధింప నెంచి నాడు.

పల్ల—(శవణం) ఇది మాసక్కసనన్నది. దీన్ని సూస్తే నాకు యికారం పుట్టినది. నేను పెల్లగాదిన్ని మోపవేసి యింటకి తీస్తానియెల్ల పెండ్ల డాలి. (ప్రకాశముగా) పిల్లనికొచ్చినభయంలేదు. నాదగ్గర వుండొచ్చును. నీబిడ్డలసంగతి కనుక్కంటానులే. శాపలమ్మ డాన్ని మోహోల్ల నుష్టబుద్ధిదగ్గిఱకు యెత్తుటానులే. దా. మాయింటికిపోదాము. మాయింటి దాస్యముల్ల నిన్ను సూస్కుంటాను భయంవద్దు. (చారుమతితో నిష్క్రమించును.)

ఇది ద్వితీయాంకము.





## సంగీతకనకతార.

తృతీయః పాదము.

సంగీతము.

సంగీతము:—అరణ్యము.

(II) చాట. పింగి ముహుర్తిరాము . పక్షతాళము.

ప|| హరిద గుం నుయాననమా మాకీక్షి శిశువు,

అ|| ప|| నూరదప్రప్య మెల్లగా గలతుము మాతాశిత్రుల మాయ  
మయ్యె|| హరిద|

ఆరుర్దాగ్గుడు సుష్టుగ్గు ఆద్యో మమ్మి మహారణ్యమున  
దా వధిపడ బుసెరు భటులక|| హరిద||

[ప్ర]వేశము—కినక సేరులు—తార—కూర్పురులు—గొలచుతరులు|  
కూర్పురు—(కినక శేనతారలచూచి) త్వరగా నశచూడి! హరి  
కేదిక్కులుచూస్తూ లేమిటి? మీరొకనే మాకూ శిల్లవారిపోయేట  
ట్లున్నది.

కినక—కూర్పురులు! నీవట్లు కి నీరుచూచి నీ నునగలు?   
తే. గీ. బాలసుకుమారి గుణజాల ♦ బేల, యెప్పుడు

కంటకావృతమైనట్టి ♦ కాననమున

నడచి యెరుగదుకాన ♦ కడుగునిప్పుడు

తడబడుచు నున్నవొకింత ♦ తాగుడయ్యె.

అధికారము వచ్చినదికదాయని యిదియంతయు మానైన వినియో  
గింప డలఁపకుండు. కాలమెప్పుడును కొక్కటియైన చూడకు.

బాల... అయ్యో! ఈమాటలలో నేమిపనియున్నది? మేము చేయవలసిన పనియేదో త్వరగా జేసకొని మాదారిని మేము పోషెదము.

తార—(తనలో) వీని నోటిచూసి యీమాట వెలువడఁగానే నాకేదగుబాటయు గాన కలెత్తుచున్నది.

కవి—(తారకు మాని) సోదరీ! బల్యులుకూడే మనము తూర్పులేనినాటను, మనము నాచుకొనుచు ద్వైతము జేపించి యుండునది తలచుచున్నట్లు కౌణాబున నమ్మముఁగూడ మనల కెడఁగాన పోణముల ద్యుజింప నెచ్చకోపోయినది. ఆహ! మన బ్రతుకెట్లుగా మారినది.

తార... అయ్యో! ఉష్టుడు మనము విచారించినందువలన బ్రయోజనములేమున్నది?

శే. గీ. ఒక్కరిఁగూర్చి మదినివే ♦ సోకరుచింత

కొందెడి యనసరంబులే ♦ రుడజేసి

నాకుపించుకొని; తొడిగిన ♦ న్నాడి నమ్మ

నా శిరఃగూడనేసి మ ♦ నల వధింప

నిలిచునాథ గావించి ♦ వెలయుతన.

గావున నిష్కలంక పరిపరి పనియేమున్నది?

బాల—కవివర్మా! మనము గమ్యస్థానము జేరుకొన్నాము. మిమ్ముల వధిచే ప్థలమిదే. ఇక మీరు ముఠాబునకు సంసిద్ధులై యుండుడు.

తార—అయ్యో! మమ్ములను జంపివేయుదురా! నన్ను జంపి మాయన్నచు విడువఁడు.

బాల—ఇద్దరిని జంపుమని ధృష్టబుద్ధి యాజ్ఞయై యున్నది?

తార—(కన్నీరు గార్చుచు) అయ్యలారా! మీరింత క్రూరు.



ముబానందగడు. నాప్రాస మగ్గికరించి మమ్మును విడిచివేయును.  
ఎచ్చటికైన బోయి బ్రతుకుదుము. మమ్ము వెదకొందరు.

కన—కింకరులారా!

సీ. కన్నీరు మున్నీరు ♦ గాఢానందము

వేసవిన్నది ♦ సుఖము

తనప్రాణములనైన ♦ కనరాకవియో

మరులకట్టాడు ♦ పొడవయ్యె

ఏపాపమెఱుంగెన ♦ యాపనిగాలు

ప్రాణముదయ్యె ♦ పాపము

కలకుంగత్తులజూచి ♦ కింకరులారా

భయము ♦ కింకరులారా

శే. గీ. సకల భూచక్రమేలిన ♦ తృప్తి

శ్రేతజనామరభూమి ♦ చిత్తస్థి

డగని బిడ్డలమయ్యె మే ♦ మాతృ

వేసుచుంటిమి దయ ♦ కింకరులారా

బాల—గాలుడ ! మమ్ము బ్రతిమాతే పుత్రుల మును

న్నది? దష్టబుద్ధి సగిలి మీరెఱిగియున్నదేకదా! మమ్ము

తార—కింకరులారా! ఇంతవరకు మీ మాతృభాగ

సోపణంబున దసరినారు. ఈ దుర్మార్గుడుగు దష్టబుద్ధి మాతృభాగ

వధించి యారాజ్యము వశముజేసికొనియ్యగి, మాయెడల స్థి

రాకృత్యము జేయ సాహించినాడు. పసచా చక్రమును మేమూరె

యెడల నెట్టివిధమున దోహదించును జేయ డిలేకు. మమ్ము

లను జువినందవలన మీకువచ్చు లాభమేమియును సేయ

రాజ గర్భిణున కన్మించిన వేదాంతచరకు మూర్ఖుని భ్రష్ట

యన్న మమ్ముల వెదకొనుచున్నంద లక్షనను కృషిదలంచి మమ్ము

జంపక విడిచిపెట్టుడు. దీనివలన మీ కెంతయు బుద్ధియు కలుగును.

కన—బాలఘాతగా! మా పాణింబులు మీరు తీయుదురని మేమెంతమాత్రమును విచారించము. కాని యకారముగా మేము వధియింప బడుచుంటమికదాయని చింతింపుచున్నాము. ఈదేహంబు లెప్పుడయినను బోవలసినదే. ఇదివఱకే మీరనేక హత్యలుగావించి పాపంబుగట్టుకొనియుంటిరి. ఇట్టి మహాపాపకార్యంబు లాచరించుటగజేసి మీరు నరకకూపంబున బడంగలరు. అదియుంగాక మీరును బిడ్డలుగన్న వారలై కావున యాపాత్యల్యమెట్టిదో మీరును నరిగియుంటిరి. మీరు మాయందుఁ గృపాంతరింగులై యిప్పట్ల మమ్ము విడువ్రుడు. మేమెటు కేసిపోయి జీవించెదము. మాచే నింతగా బ్రతి మాల్పించుకొనుటకు మీకెంత శ్రేయస్కరముగాదు. మీరును యోచించి చూడుడు.

కూర్మ—(బాలఘాతకునిజూచి) ఒరే! బాలఘాతకా! ఇది వఱ కనేక హత్యలు జేసినానుగాని పీచ్చును జంపడానికి చేతులు రాకుండా నున్నాయిరా—ఏమయితే అయిందికాని వదిలివేశాదాము

బాల—అవునురా. ఇప్పుడు మనము దుష్టబుద్ధిదగ్గిరకు వెళ్ళి. యేమని చెప్పదాము?

కూర్మ—చంపేశామని చెప్పదాము. ఏంచేస్తాఁ జేమిటి. ఇందులో మించిపోయినదేమున్నది.

బాల—నాకు అల్లాగేతోస్తూవుంది. (కనకవర్మతారలనుజూచి) మీరీవేపుకు యెప్పుడూ రాకుండా యెక్కడో పొట్టపోసుకొండి.

కన—తలారులారా! మీకు శుభంబులు గలుగుఁగాక. భగవంతుండు మాయందుండి మమ్మరిక్షించుటకు ముచిబుట్ట ప్రిసాదించి సందులకు మాకు మిగుల సంతోషముకలుగుచున్నది.

బాల—ఇక మేము పోయినట్టేదీమీ. రా రా. (కూర్చునిపోనిష్క్రమించును.)

తారి—'న్నయ్యా'! అభిగనాటసు కృపనలన విరిచెటలు నుండి యివతలకుఁబడి బ్రదికిపోమి.

కనక—చెల్లెల!

తే. గీ. కూర్చున్న నభివారె మెదిలి కొంత సేదని  
 తారం మునుముసల నుగిరి ధి బాలుచి నెగిరి  
 శిల్పములగులాల్ప విడిచెమిది నెగిరి  
 ముక్క న నెగిరి నెగిరి వినియిగాదె.

అది యట్లాడెనుమ్మ. ముగియ విని యన్న కన, బ్రయాజన మేమున్నది?

తే. గీ. తెంజి నగలుగడు గాబ శి; ధి నెగిరి పక్ష  
 బుట్టములమున నెగిరి ధి వోయెనె, యెగిరి  
 గిరిరావెనరు నునల ధి గాతురిగిరి  
 బ్రదికియుగిరి నేమి ధి భరిముగలదా.

తారి—'న్నయ్యా': భగవంతుని కృపయున్న నో నమ్మను మనము చూడకయునుమా?

కనక—సాదర! దీనిని గూర్చి నేమిని నచియింపగలను?

తే. గీ. మఱిదిగలననించునట్ల దు ధి రాగ్యముగ  
 శాణములైన రోయుచు ధి నానియింప  
 ముసల గి ముగియచెనో! ధి పుంపియందా  
 కష్టముల నందచున్నదో ధి కానరాదా.

ఏదియెల్ల నుచు నామె వినిచియున్న నో నెప్పుడును సానము చూడగలము. (ఇంచుక యుగకుడి పూర్ణము! ఇంచుక వశిగా

నకుప్రము. మనము సాధ్యాసమయముగాకుండ నేదేని పురము జేరు  
కొనవలసి యున్నది.

తార—(నడచును) అబ్బా!

(12) పాట. హే! కన్నడరాగము - రూపకతాళము.

ప|| కట్ట మాళ్ళి బెట్టా బెట్టా హేమోహతవిధి.

అ|| ప|| పుట్టెలిమీ చక్కెనట్టి పుత్తెల్లను తుడక్కెనట్టడవి కమ్ములక  
బడుచుండక విధనానెక కట్టా

కనక—తల్లీ! ఏమిది. ముట్లగుచ్చుకొ నెనాయేమి? అకటా?  
ఎంతయపస్తవచ్చినది. చొక్కాబునం నే ముట్ట నిుక్కట్లు పడుచుంటి  
వికదా?

తే. గీ. చెల్లెలా! రత్నపాధని ♦ శ్రేణులక-

మిగుల నాయాసమందును ♦ వగడుపేల్పు  
కంటకావృత్తిచూ డేరార ♦ కాననమున  
నడుచుమిరిగివి యడుగులు ♦ తడబడంగి.

తే. గీ. ఎండవేడిమి యభిరక్తు ♦ యుసగుకతన

జన్మటలు గ్రమ్మె నె శిరీ ♦ కమ్మనందు  
పూర్ణచంద్రాబోలు నె మోముమిగుల  
వాడియుండెను నిశయందు ♦ బద్ధమట్లు.

నిన్నుజూచిన నాకు మిగుల చింతకలుగుచున్నది. ఎన్నడును నెండ  
కన్నను వానకన్న నెటుంగని నెపే ఘోరారణ్యమున నిట్లాయాసమందు  
చుంటివికదా. ఎంతవానిగర్భంబున జన్మించిన నేమి? (భగవంతుని  
నుద్దేశించి.)

మ. చతురంభోధిపతీతముక్తికమహీ ♦ సామ్రాజ్యభారంబునా

యత బౌహయగు శింబునన్ నిలిపిరా ♦ జోఘులు సేవింపగా

క్షీతిబాలించెను నిత్రసేన నృపతి ♦ శ్రేష్ఠుడు తానేగదా  
 తృతిమాన్గంబెఱుగిరిగజాలనుకటా ♦ తొడిగి! మునుబోసవే.  
 పరమేశ్వరా! మహారాజునక్కలుచున్నాడు మాక్లిసానటంబులు  
 గూర్పుటకు మేము నీయడల నేనుబోనా చాచరించెమి?

తార—అన్నయ్యా! కాలమంతయు చూచిపోయితి. ఎక్కడ  
 డభగవతుడు? ఎక్కడోనిచు? అన్నతంబుబాధచూచుచు బరంగ  
 నల గవయకొరువారును, భగవద్విక్రమింపఁబడుచు, చికింబుల గొంతు  
 కలగోయువారును, సుభాబుల బడయుచుండిరి.

తే. గీ. సత్య మనుగొంటు పోయెను ♦ స్వమత కారి  
 వాభిమాన శౌర్యగుణము ♦ లగ్నిబడియె.  
 దైవభక్తియు నశియునె ♦ ధర్మమెదు  
 నిలచియుండును ధరనేపై ♦ లలితచరిత్ర.

ధర్మాబు నశించుచున్నప్పుడు భగవతుడు మాత్రముగనా?

కనక—ఇతరులు మునుగొంటేగా విచారించినను విధాతవ్రాసి  
 నవ్రాత తప్పదు. ఇదిను మన మెన్నికడగల్గె గురువలసయున్నదో  
 యని మాత్రము నేను చింతింపుదుంటిని. నామామికేయి? సుకుమార  
 శరీరపు. ఎన్నడును గృహంబువిడిచిన దానవుకావు.

తే. గీ. అదిగో కనజాలఁ గనజాల ♦ నతినమిన్న  
 పద్మవత్రి భగవైస ♦ పాదయగి?  
 యరుణకాంతిని వహించె ♦ నడవయెండు  
 గణనపాపాణములుపోకీ ♦ కార్తీలుకతన.

తార—అగ్గిజ! నీవు సన్నుఁగూర్చి చింతింపవలదు. నామూల  
 మున నీవు కష్టపడుచుంటివి.

కనక—అమ్మా! నీవెప్పుడును నట్లు తలఁపవలదు. ఎంతమాట  
 యంటివి. నీవు నాకు భారమా?

శే. గీ. అవనినున్నచో నన్యునె ♦ న్నాళ్ళకైనఁ

గాంచి, యాకెడోఁగూడి ను ♦ భాచఁగలము

గాకయున్న నిరువురమే ♦ కముగ గంగ

యంగనఁబడి పొగొమ్మూఁ బా ♦ యంగఁగలము.

తార—(ఇరువకనడచి) అగ్గిగో! ఈపొగితమున నచ్చటను  
జలంబులు లేవుకాబోయి. దాహమగుచున్నది.

కనక—కనుచూపుమేరూ! నెక్కడను జలంబున్నజాడ గాఁపిం  
చుటలేదు. అయినను సిస్కినిమను దెచ్చటకైన మంచకపోవు. నను  
చుటకేసి నిపు వెగుల నెప్పుయ్యుంటివి. శ్రమవాయు మెక్కి తలసేపిచ్చట  
విశ్రమింపుము. నేచోగన నీరు బాంబూలు గొనిపోచ్చెనను.

తార—అన్నయ్యా! పోనిమ్ము. నాకు దాహమక్కరలేదులే.  
నాకై నీవు శ్రమచూడవలదు.

కనక—అమ్మా! నీవు సంతరింపకుము. నీవు మిగుల దాహ  
ముగొనియున్నట్లు నీపెదపలే పొలుపుచున్నవి. నేను సత్వరంబుగనే వ  
చ్చెనను. నీవుమాత్రము శాగరూపరాలపై యూపము.

తార—నీవుమాత్రము శీఘ్రముగా రావలయును.

కనక—సత్వరమ్ముగనే వచ్చెనను.

(ఓమ్మగ్గిరించుచున్నాడు.)

(13) పాట. యమనా కళ్యాణిరాగము - ఆదితాళము.

ప॥ తల్లిశాంతి నీత్యమగుళక కలుషహరి కళ్యాణీకాత్యాయనీ॥

తల్లి॥

అ॥ ప॥ పిల్లలమమ్మా పితృవిహీనులము యిల్లా వాకిలా తల్లా మాకి  
టా యెల్లవిధంబులదిక్కు నీవేగాన చల్లని సత్కృపచల్లిబో  
వవే॥ తల్లి॥

తార—(తనలో) అక్కరుండగుచున్నబుద్ధిమాకెట్టియిడుములు

నూచినాడు. ఆకర్మాత్మ వాచరిహదలచిన సాహస కృత్యము  
చను భీతి మాయమ్మ యేదానిబోయెనో. జనము... నా  
...యోగ్య నావలనను నానడనూ కెంతెష్టపడుచినా...  
పా...వలననే నిరపరాధిచేతి నాకే...మము...  
వేమకొంటి, కాని...బికినోనామనచి...  
కాలనూ! నీవెంతైనా దగినదాచు. నీ...ముషములో నేనా...  
ధనికునిగా జేయుచువు. నీకుని నిరుపేదగా కోర్చి కుష్ట...  
బ్రేలుచువు. (ఇరుకె యూరకు డి...జూచి) జలముల...  
చుట్టకరిగిన యన్న మిగతను రాజాయెను. పులుల మా...  
ను, సింహనాదంబులును, హృదయభేదనం గావరిపుచున్నవి

[రాముడు—భీముడు—నమమరువురు దొంగలు ఒక వేము.]

రాము—(భీమునిజూచి) యిట్లొకల్లా దొంగలును గొప్ప  
కిరా. దాన్నిమించింది ముకో...జేకు. డిబ్బు నాలా సాహసముచా  
లంటు యివి - నేర్చుకోవాలి. అన్నిసకృతులకంటె మిది సాహసం  
కన్నంతవ్యక్తం నేరేసిదా. బజార్లలో రక్తగాపూడప్పుడు చచ్చేపోయేవాన్ని  
జిబ్బుల్లోవిలాగివం, సతా'లదిగ్గిర రాత్రిల్పు పగులొన్న ఆపవాళ్ళు  
మెళ్ళులో వికిత్తిరించడం మొదలయినప సాలాశాశ్రులునా...  
భీము—నీకు తెలియని వేమున్నామురా. నీవు దొంగలకా గు  
రువువే అయితేపి.

రాము—ఏం గురువురా. మనోశ్శ్లో కల్పిక్లబ్బలేదోనో. ఈన  
డాన అమ్మో పుచ్చనం సరిగ్గా నేయకపోవడంపా మన దొంగలినానా  
చాగడంలేదు. ఆయమ్మ మనమీద సిన్నచూపు సూ...డది. నేను  
సెప్పినవట్టల్లముం కనా మనోశ్శ్లో ఏం తమసా అయిన ప్రా...ది.

భీము—పాపం మనకేంరా.

రాము—ఏం యినడం. నీన్నరాత్రి ఒక బోటికెప్పడా...మ్మ,

న్నాను. ఒక సో తమిళిలే. అమ్మోరుపండుగ సేయడానికి సారాకొన వస్తురామరి. అందుకని సారాకొట్టుకు కన్నయ్యేసి రెండుపీసాలు దొ ళ్బితుకొధామూట యేక వెగస్తినారు. ఎల్లాగయితేనేం పచ్చారులే. కాని అమ్మోర్కపేషక సెయ్యడానికి ఒక కన్నెపిల్లను బలిస్తామా. అ మ్మోర్కిమనమీదయెల్లా దయవస్తుదనుకొన్నావు.

భీము—త్వరగా నడువూ. మనోళ్ళు కనిపెట్టుకొంటారు.

(ఇరువురు నడుచుచున్నారు.)

భీము—(ఇంచుక నడిచి) ఒరీ! రాముడూ! ఇబోటోయీ. ఇక్కడ తళితళి మెరమెరాలాడుచుంది. ఎవరో అడమచ్చిలాగుంది. యెవ్వరులేకుండా ఒక్కర్తేవుగదిరా. కారణమేంటో కూంత కనుక్కుం దామా యోరీ.

రాము—ననుక్కొనగంటోమరి. (సమీపించి) పిల్లా! మీది యేమిట.

తె—అయ్యలారా! మీరెవ్వరు?

రాము—మేమా! యీ సమీపంలో వున్న పల్లెలా రేమాది. చేను కొడిపోయి నుత్తున్నాము. నువ్విల్లాగ వంటరిగా యున్నా వేటి.

తార—కొన్ని కారణంతరములచేత నేనును మాయన్నయ సెట్టరెమ్మములపాలయి పోతిమి. ఆతఁడు జలంబులకొఱకే పొంతమునకే యరిగినాడు. నేనాతని రాకకై వేచియున్నాను.

రాము—(భీమునితో రహస్యముగా) ఏదన్నా “బేలు” వేసి దీన్ని అమ్మోరుగుడికి తీసివెళ్లాలి. (ప్రకాశముగా తారతో) అయ్యో పిచ్చితల్లి! ఆయనకోసం చూస్తున్నావా? ఇంకా ఆయన. \* \*

తార—అన్నలారా! అట్లు పలుకుచుండిరేమి? అతనిని మీరు చూచియుండిరా?

రాము—ఆయన ఎవ్వరో మాకేమి తెలుస్తుందికాని ఆయన



మంచిస్థితికోసం మాత్రమేయెతుకుచున్నాడని మాతాత్మగా సందేహించి పెద్దపులివచ్చినట్ల కలుచుకుపోయింది.

తార—అహా! అశుభే నాయనా! నీవు నాకు నష్టమేస్తుంది.  
(మూర్ఛిల్లిలేచి) హా! అగోచర!

చా. జనకుని, దుష్టబుద్ధియగు ధీమతీ; దుష్టయుక్తి ముగ్ధునా  
తనకి భయంబునందితన ధీమతీబోయిన; శోక ముగ్ధునా  
మనమున మింగియుంటి గుణ ధీమతీదేవి విలువైనవిదాన, నో  
యమజ! ఇదేలకేపును ధీమతీ నానావిధవిధముల.

అక్కడ! జలాబులు గొని తెచ్చుచి నీవు నీవేల పంపితిని?

తే. గీ. తగునె యానీతి ధైర్యము ధీమతీ

మోగిగాఁ జేసినాన నీ ధీమతీ

జీత మక్కటా నీగూడ ధీమతీ

నిపు పడియున్నానీతి ధీమతీ

అయ్యో! నిన్ను విడిచి నేనుమాత్రము నీవముల భరించియుండునా?

రాము—చచ్చిననానికోసం యేమిస్తే నీవు నాభయముగా  
మరల నచ్చెదరా?

తార—అయ్యో! నాయనా! నీవు నాభయముగా

(మూర్ఛిల్లి పుచ్చుది.)

రాము—ఒరే! నీవేసిన యెత్తు బాగానే పడిందిరా. చూడు.  
మూర్ఛిసాదింది. నీవేసినా మనం ఇద్దరము యీపిల్లను కాళికాదే  
విగుడికి తీస్తానివెళ్ళదాము. మనకోరిక ఇయ్యాలకు పండింది. అ  
మొగి దయవచ్చే రోజువచ్చింది. ఏదలునా పెట్టపుట్ట లిరా.

భీము—నీవు చాదస్తం ముండాకొడుకువు. కబుర్లు నెప్పుడు  
యీపిల్ల మళ్ళీ లెగుస్తుంది. కానీ. మరీ.

రాము—అల్లాగయితే కానియ్యి (ఇరువురుగలసి తారను తీసుకొనిపోవుచున్నారు.)

[కవచవర్మ పరీక్షించును.]

కవ — (తనలో) జలంబులు గొనివెచ్చుటకు మిగుల తడవైనది. న్నాకై నీవీక్షింపుచు నాచెల్లెలెంత భయంబునందుచున్నదో. (ఇంచుక నడచిచూచి) ఈసలంబునందే కదా నాసోదిరిని విడిచి వెళ్ళితిని. ఆమె యుచ్చోటను గానరాదేమి? (ఇంచుకనడచి నలుదెసలఁ బరికించి) అక్కడ! ఆమెయింక కనుపడదేమి? ఈయరణ్యంబుననున్న విచిత్రంబుల నవయుట కరిగినేమో! (అలోచించి) నేను లేకప్పుడామె యట్లు చేయునే. (ఇంచుక యూగుండి) అయ్యో! ఏమైనదోకదా. (తారచుట్టించి)

నే. గీ. దాహబాధను కీర్చుగాఁ ♦ దలచి జలము

నరసి గొనిరాగి నన్వేడి ♦ యరిగినాడ

నిలలోపల ననువీడి ♦ యెందుకని

నో! యెటుంగనాలకుండి ను ♦ భోజనేల్లి.

చెల్లెలా! పొడిగిగతించినను, దల్లి యేవానినిబోయెనో యెరుంగకుండినను, నీవుగోవికదాయని యెక్కింత ధైర్యముబూనియుంటిని. నాతోఁ బరిచయమున్ననునీ, పోణమునైచోరి యెఱిగిబోయితివా! నేక యేర్వచ్చునుచాలైనఁ బడితివా? అల్లుకాకయున్న “నానైన నగ్నిన క్షోణి స్వయమున నో యెటుంగనలయు” నని నలించి యెఱైన కాగియుంటివా? అయ్యో! ఎంతపించినను బయకవేను? సోదరీ! నీవు నాదిర్తంబును నోభింపననసరములేకు. నీవు బ్రేదికిన నేను బ్రేదుకును. (ఇంచుక నడచి) ఎంతవెదకినను నాచెల్లెలు గానరాకున్నది. ఆమెను విశ్వముముగా నేమార్గమృగంబోగోపొలయందును. అక్కడ! ఆమె లేని నాకీవమేల? (భగవంతు నుదేశించి) పరమేశ్వరా!

దీనికంతకును నీవు కారణుడవని నిన్ను నిందింపవలసియున్నది.

తే. గీ. దుష్టబుద్ధిచేతను దగడ్డి ♦ మనుమజేసి  
తల్లి నారీతిబాపి; ము ♦ దుబుగూర్పు  
ముగ్గుచెల్లెలను నరణ్య ♦ హమియగు  
కేమిజేసితి యొక్కత ♦ యెఱుంగజాల  
నింక నేమేమి కావింప ♦ నొచ్చినామో.

తండ్రి! నీవు పెట్టడలంచిన కడిగిండ్లకన్నీటిని యెడిబట్టినాను. ఇది నీచిత్తము పాణములు పోయినతరువాత బ్రవేశమయ్యెదవా? (ఇది కి యూరకుడి) కేసిరీతినఁ జూతి పురుఁ గాలహరిణి గొవలించుచు వలనఁ బ్రయోజన బేరియున్నది? చెల్లు బాపివరసెదఁగాక.

మ. నరపూర్ణగుణిగోలు నెమ్ముగముఖ ♦ భాస్వి కంజాక్షి; సో  
దరుసోనాదలు భక్తితోకలుగునా ♦ తన్వగి; తల్లింజుల్  
ధరణిబాపియు నన్నజూచికొనిమో ♦ దుబాగునక్కంత నో  
తగులారా! గిరులార! కింగిరెలుట ♦ దారకసతీత్వము.

(నమ్మిమీచుచున్నాడు)

అని.

గంగము:— పల్లనాయకుని గృహము.

[ప్రవేశము—చారుమతి]

(14) పాట. సంగ! కిషిరాగము కళ్యాణము.

ప॥ హతవిధి కాలస్యము మార్పులచుచ్చెను.

అ॥ ప॥ పుణిగులను బాపి మదకు గుటకు నను గొనవచ్చెను సప్త  
ద్వీపసముద్రమునీతి భూచోమేలు చిత్రచేతచరిత్ర వట్టి  
మహిమైతన్వము నేర్చు పల్లనానిలుబురు నానాలుడెట్లనలసెన  
మాన-॥ హత॥

చారు—(తనలో) అహ! నానీతి యెట్లు గామాలోనది. సప్తద్వీ  
పసముద్రముద్రితవహీచక్రియ బలిపాలించు రాజేంద్రునకు భార్య

నైన నేను వట్లవాని గృహమున నున్నాను గతిపట్టినదిగాదా. కాల  
గతి తప్పినట్టివప్పుడెవ్వరిన నేమిచేయగలరు?

తే. గె. రికతే బాహురను బా ధిష్ణుడలగుచు

వేద భక్తులగు ధనికులు ధేదయగుచు

సునుతి, కుమారులు గునుతి సునుతియగుచు

కాల మన్యకుడగుచు గలరు జగతి.

నీనానమునకును బడినోను తీవ్రములగుట యుటి నేని నాకీచింత  
యుటపో నదా. 'పట్ల' నాకడయును, దనయయు నేమై  
కోదా. మన నా కూరొక్కటను కుష్టబుని వానిని జూపించి  
యు నదా, 'పట్ల' రా' మింకొకటి. జగముననుండి  
రావో. ఆ కుష్టబుని మింకొకటి మింకొకటి దెలియకుండ జేసి  
నాకు నదా. పట్ల రా' మింకొకటి మింకొకటి నేను మరల మిమ్ము  
జూడమునుకనా? పట్ల భోగ్యమును నేను నోమకొనియున్నానా?  
అయ్యో! నాకీయుని యొకరు!

[పట్లనాయకుడు ప్రవేశము]

పట్ల -- చాచుమనిగి (తనలో) ఇదిగో! నాదునుతి లిక్క  
డకుకూడా. నీ మొగ్గు గొర్రుచున్నాడట. ఇటువంటి రవ్వం  
టప్పిపుట రాజ్యాలకు గీజ్యాలగును. ఇదే మోచ్చు. ఇదే  
చొర్ల. ఇమ్మాల దీర్చి మనము పాఠ కుల గావాలి. నానుంటిది  
కూడ నున్నానో మనమును మదే (చాచుమనిగి సమాపి  
చి) పా శాచుమనిగి ఇమ్మాల మన ఆచారమునావు బెంగపెట్టుకు  
న్నావామో? నా యిటికాడ నీవు నోటాటి. మనోద్వేగకాడను  
చి యిటికారిమీద మనలోవలె లేదు. సూశావా! సంగతి.

చాచు -- తనలో) నీకు! నీకిట్లు పలుకుచున్నాను నీచకుల  
కాడనుదే మునుసాక్షము తెలియక యిట్లు పలుకుచుండనోవు.

పల్లె—పిల్లా! మాట్లాడవేరే. నామామిడిని వెళ్ళవలెనా  
మోసు అల్లడిగో అప్పుడు ఇన్ని సముద్రమునాది లీశానే అనాటి  
కాడినుంచి యే శెప్పను మిది మనసునాదిది అహ సెప్పతా  
ననుకొంటున్నగాని చిక్కప పురుకుకున్నాను. ఏమనితే అయి  
దని యిమ్మాలలోన నేప్పేస్తున్నాను. మాని అది అనుకూదా.

చారు—హరి హరి! పాతిమాట అవి.

శే. గీ. పాణిదానము గుహలు \* పల్లెనకు  
నన్నుదల్లిగానెన \* నామము  
గోరుకువె ముగిసిరి \* గుమలేనగుచు  
బరిహసి పర దీవికి \* బరుకున్ను.

నాయినా! శివుడయో శేషియగు యగితివి. అమాట నివచ్చుదు  
ను ననుచును. నే వివరమునను.

[పల్లెనాయకుని గొప్పయగు ఎల్ల సప్రవేశము.]

పల్లె—(తనలో) నామము గొప్ప అనాటికొను శివు  
యేమి దీత \* మార్పునాదు. పాతిమాట పుడి \* అది  
యిందాము.

(చాటున నగుచు)

పల్లె—నూను శివుమహీ! యామామిడి కీటిగా, నున్న తల్లి  
వికాపు నేను కొనుకుచుగాను నామాటమునకో, మొగుడుసప్రవేశము  
నానుకదా. బిడ్డలమాట అసలే శివుమహీ పుడిది. ఎదుకు సి  
క్కులత్తు. ఇన్ని నేను పెద్ద సతాను. నా, నున్న గామిడొచ్చును.  
నువ్వ నన్ను పెద్దాడినానంట సపాదసాధ్యగా వచ్చును. ఇదిదాన్ని  
తగిలేస్తాను..

చారు—అయీ! పల్లెవాడ! సముద్రమునబడి చచ్చుటకు  
సిద్ధముగా నున్న నన్ను కీర్తిరథిగా శివు ఇట్లు వలుకుట భావ్య

ముకాదు. షరకాంతలనుగోరుట మహాపాపము. నీనుడవగుటచే దెలియక నిట్లుచుచు దివి. ఇక నట్టి పశ్చింస గట్టిపెట్టుము.

పల్లె—నీను పల్లెపల్లె అని సందేహిస్తున్నావు కామోను. మీరు తుల్యములు. మీను నిట్లుకుల తోలియులము. మాదీ శాపలట్టడం లో పోరునైనను లే. పోయిచుకొన్నావెంటి మీకేం తీసిపోం. పాప మేంటి, పుణ్యమేంటి, సన్నితరువాలె యిదంతా యెవ్వనూస్తారు. నీవు నన్ను మొగుడుగా నూనుకొంటివా నీను శాపలట్టకొని వాటి మీద పోయిన డబ్బుల్లా నీసేతుని పిచ్చిను. నామాట యిను. కాదనకు (సమీపించును)

చారు—ఛీ! ఛీ! దూరముగా నుండుము.

పల్లె—నీ నీ-అంటావు. మాలోడ్చి అనుకొన్నావా యేంటికి సరి. సరి. నీయందా సూతేటప్పటికి భ్రమపుట్టింది. మాకులంబోర్సం దరికి నేనే నాయకుడిని. నువు నాకు పెళ్ళానవు అనినావంటే అళ్ళి తా నీగులాబోళ్ళయియుంటారు. నీకు రాణికంటే యెక్కువగా జరుగుతాది.

పల్లె—(తనలో) దీన్ని యింటికి నేరదీసిదిదుకే కామోను. ఇది యింటిని పెళ్ళాడితే నన్ను తగిలెస్తానంటున్నాడు. ఇంకా కొన్నాళ్ళిముండ నిక్కమందంటే యిదంతపని శేస్తాడు. ఈముండని యిక్కడనుంచి లేవకొట్టాలి. (పల్లెనాయకుని సమీపించి) ఏంటి. దీనితో రహస్యం. మాట్లాడుతుండావు. ఇది నీయబ్బవంక సుట్టమా, అమ్మవంక సుట్టమా.

పల్లె—(తనలో) ఈముండ నామాట విందాయేంటి. యింట కొంపముంచేస్తుంది. మా గయ్యాళి. (ప్రకాశముగా) ఏంలేదే. పాపం యేడుస్తుంటే పూరుకోమని నెప్పున్నాను.

పల్లె—ఏంబాంకు బాంకు తావు. నాను యింటులేదు. దీన్ని

పెండ్లాడడానికి నూస్తూండావాయోటి? నాకంటే యిది సక్కుదా  
యోటి? మనా కూతురినే కించలాగు దీ? మొదటి. ఇకొచ్చిన  
కాకినుంచి శాపలబ్ధిగానికి యెల్లకుండా నన్ను. ఈ నానా నీ యె  
క్కడ దొరికిందో. నాలు నాలు నీన్నీ పెండ్లాడినావో. నీకు పెండ్లి  
నానుసేస్తానురా! (చీపుగుట్ట బిచ్చి కొట్టి మున్నది.)

పల్లె—ఇదే ట! మొగుడును కొత్త. అన్న నూజూ,   
తే నస్వతారు. పెండ్లిచేత చెబ్బలు అన్నదని నీ కళ్ళకిపెట్టెడి.  
పూరుకుండే.

పల్లె—ఎక్కిరిపిచేయో శవము. నిగులె మెధుర! దీన్ని కట్టుకొని  
నన్ను తిగిలేద్దామని నూస్తూండావా! (మొల కొట్టి మున్నది.)

చారు—(పల్లెనిజూచి) ఆమదానా? నామాలు ముక్కి. ముక్కి  
యాలింపుము. పరిసంగొట్టుటగానీ దూషింపటగాని సరికడ దగరు. నీ  
వట్టి నాహసంబును బూసకుము. (చేయి కట్టికొనును)

పల్లె—(చేయి విడిపించుకొని) ఇదెక్కడ నెన్ను ముల్లక్కడానికి  
ది. వదలొగులు. నువ్వొని కట్టికొని నాకాపురారో పెండ్లియొట కులు  
నూస్తూండావాయోటి? యిక్కడనుడిగంపు నిమునమునాన్నది.)  
పొళ్ళచేత నెప్పుడెబ్బలు కొట్టెస్తాను. పదకది. (గొట్టెమద్రూము, బులె

చారు—(తనలో) అక్క ట! పల్లెనిచులచేత చుచున.)  
బాండుచుంటిని. (నెమ్మకీ, ముగ్ధాశాసే)

పల్లె—(పల్లెనాయకుని జూచి) ఇక పెళ్ళియేదో.

పల్లె— ఛీ! ముండా నువ్వ నాకక్కరలే

పల్లె—నేనక్కరలేదా. యియ్యాల (నెమ్మకీమీ మును.)  
స్తాను కాళ్ళిరగేస్తాను.

పల్లె—ఈముండ అల్లరిచేస్తుంది  
రేతి)కాడ గొంతుక్కాయ పిసికేసేరక, పల్లెగయినా దన్ను బలహం  
లుకోవాలి లేకపోతే తిగిసిపోతుంది. (నెమ్మకీ మించును)

జరిగిచో బయలుపడుట నుద్దరముకదా (అటునిటుజూచి) ఏమిదీ! వేట గాండ్రిగను నన్ను గలుసుకొనలేకయుండిరి.

రాము—(తారనుచూచి) వూరికే యేడుస్తావెనుకు. శుభం గా మీరు నిన్ను దేవతకు బలిస్తూవుంటే యేడుపేంటి. సంతోషంగా వుండి దేవుడికి మొక్కుకో.

తార—(నవ్వుచూచి) యో! ఈకూరలు నిర్గయబూని, నన్ను హింసింపుచున్నారు. నేటిపు నాకష్టములు గట్టెక్కును. తల్లిదండ్రుల విషనాశిలినను చింతగూడ యగుగలగును. నన్ను నీకు చూపుచుండిరని నేను విచారింపనుగాని, నాబాడ దెలియక నాయన్న నన్నుగూర్చి యేమికష్టమాల పాలగుచుండెనోయనిమాత్రము దూకుచెడను (సోద రుడుదేక్షించి) నన్నయ్యా! నీకు నన్ను జంపుట కిచ్చయ్యను. కావున,

తే. శీ. తిండ్లి పివతంకిచేత ని + ధ్వాల్కియూ

నన్ను తనదారి చెనటికో + యుగిసె; మున్న

చెల్లెలికితె జనెనయ + జిత్తమగు

దలచి, పొగిముల్ వీడంగ + వలకునున్ను.

రాము—(తారనుచూచి) ముష్ట భగవంతుణ్ణి వేరకోవడం అయిందా?

జయ—(నవ్వుచూచి) ఈప్రకారమున మరుజలమాటలు వినవచ్చు చున్నవి. ఈసమీపమున నెవ్వరైన నుండిరికాబోలు. (ఇరుక నడచి) ఇదిగో నచ్చట కిచ్చి యెప్పుడు మొక్కు దేవాలంబున్నది.

భీము—పిల్లా! కొందరిగా గానియ్యాలి.

(15) పాట. శీలువాగము - ఏకతాళము.

ప॥ శారీ అంబాశారీ కరుణాభరణీ లింగజ్జననీబోధము యీతరినీ  
అ॥ ప॥ కూరలు నాయెడ ఘోరకృత్యమొనరింపనుండఁ మీరెవ్వ  
రు దిక్కరయ్య! నివేదనవా. క్షమింప నమ్ముమున్నవారు! శారీ!



తార—(తనలో) అక్కడా! మీరు నన్ను జూపుటకుఁ దొందర పడుచున్నారు. హాపర మీశ్వరా! నన్ను పుట్టి మీరి బానిసుండి రక్షింపు వారెవరు? ఈనిర్బినారణ్యమున నాయేమపు నాలించువారెవరు?

సీ. అనుజన్ముడే కూర్మిఁ డి డాచును మాతంగి

దునుమాడి; యూపైన డి ఒననియెడల

మొరబుద్ధినిఁబూన డి గుడి భయమున మా

ఒనని యేదానినో డి చనియె, నత

నైన నైపక నన్ను డి నాయగ్నినిఁ జగప

గావకుహర గి డి కరుల వేడి

బ్రగుకు తెరువుఁగాంచి డి వచ్చుచును చుగ

దానినోపల నేను డి దాహశాధ

సందాగ జలముల డి నగసి తెచ్చుటకునె

నాయన్న యిక్కచోట డి నన్నువి

తే. గీ. యిదిగె, భీకరాక్ష్యాలు డి నాకు నున్న

నన్ను వంచించి కీరిల డి న్యాయము

దేవికి బలిసేయఁగాఁ డి దొప్పనాడు

చిత్తమును నభీతి డి శాసనము

నన్ను తెప్పించి గాచు పు డి న్యాయము

నైన నేరె రాజేయఁ డి కలఘు నున్న

జయ—(తనలో) ఎవ్వరో మెక్కి

యాలయాలున విలపించుచున్నట్లున్నది. (ప్రే) కిరాతుల చేజిక్కి యీ

(బిగ్గటగా)

చ. మనమునఁ భీతిఁజెంద కను డి

వనజదళాక్షి నిన్నుఁ బలు డి

హానములేకను వచ్చుచుంటి; నో

తల పొంగివదిలనున్న గు

రనుల వధించి గాచెదను \* శౌర్యపరాక్రమవృత్తు శేర్పడక  
జనపతియైన వాడెపుడు \* సానలకడ దీనిలోకమున.

(అని గుడిలోఁ బ్రవేశించి దొంగలకుబూచి)

శంసదారురము.

అశేషరాత్నలార దీక్షింపు \* రాత్నలైపుడని నీ

సర్వోపశాంతివేదమున \* నీ సుఖసాగర

నిరాస పాణిలోకుండు \* విక్రమాబు మూలగా

కరాచిత్ర గుడ్డు నేను \* కరుణ గుణితన.

(పిమ్మట నీ దిక్కుదాసానము)

భీమ—పిమ్మటను. ఈ కుము గిరిలోను. గా కలలోను.

కాలికి 2. పిమ్మటను. (పరుగు నొనరించు)

2. పరు—పి! పరాక్రమ వా! మూరెక గానియు ?

(తొలగిపోవుచు)

తార—(తనలో) ఈమహాత్ము డెవ్వరోదా? నామెడలగను  
ణబూని ధక్షిణాక్షులను చాచినాడు. (ఎరుకుబూచి) \* మరో కిరాతులను  
వధించికాగోలు నా కష్టమున నాడు.

జయ—(పిమ్మట) నమో నమో! ఇప్పు కిరిగిడదలచిన  
యాకిరాశులు ఈ కిరిగిడు. ఇది యిది భూమిని విజయము.

తార—ను. ఇది యిది భూమిని విజయము. ఇది యిది భూమిని  
నన్ను రక్షించుచున్న పుష్పకవిను న వెవ్వరో మెఱుగ  
వచ్చునా?

జయ—శ్యామరాజువా! ఇప్పు కిరిగిడదలచిన నున్న  
కల్యాణపురాబురు బాలిమి జయింపేమడచు వృత్తులును. నేమృగ  
యావ్యాజులను నిర్మూల్యులును విడువెది, నివిరాపం బాలించి  
నిన్ను రక్షింపదలచి వచ్చు. ఇది యిది భూమిని విజయము.

తార—

చ. జనపతివారాచ నానీ! గుణ ! సత్తమ ! సత్కృప బూని చూపదకా  
మునిగితపించు నర్హి పు ము \* బోధనగ నే జనుచుచి నీ నీగుణా \*  
దులిరుముదుబుంజూన్పింపి \* ము వినుతించుతొలుత మేమయ్యుకా  
బాననువదల, లేనది; పరి \* పూర్వము బగు భక్తమొక్కడక.

జయ—శివ్యామహ! నయదాత లే నయగిదిగూనా?

తార—ప్రణదాత్తన న మొదలుగొనూడ రాక నేను పాద్య  
దేశ నృపాలునిగు నర్హి నేనా యున్నానాతను ము పీచునాడేచుగు  
దృష్టబుద్ధి మూతాచేయెడిల నొకటాడెడిల చింతాచేల సమయాబు  
న వధించి, మాతల్లిపై నున్నబుద్ధి బాపెన నామె యెటుకోపోయెను.  
నన్నను, మాయన్నయగు కనకనన్ననుగూడ వధించిపడిన పిలవలను  
నరణ్యంబునకుం బాపె, మేమాకాగినులను వేడుకొని ప్రాణంబుల  
దక్కించుకొని వచ్చుచుండి, దానాదీక్షితనగు నామిత్తము నాయగ్ని  
జండు జలంబుల గొని పోవచ్చునను బోన, నన్నెచోరులు వంచించి  
యిట్లు గొనిపోవ్చి. (తానుకొ యూచుకుంట) భూపాలా! బ్రదికియున్నం  
దువలన బ్రేమోజ్జ్వల మేమియున్నది? తొక్కియాం గొనిచెను. తల్లిజా  
డలా తల్లియను. మునరణ్య మధ్యమందగ్గరి విడిచితిని. మనస్సును  
నెంతరాయిగాఁ జేసికొని యున్నను, ప్రాణములన్ని పీపిమాతగ్గము పోన  
కయున్నది. (కన్నీరు విడుచుచున్నది)

జయ—తల్లీ! నీవు చింతింపవలదు. మీగు నాకు బాధుకోటి  
లోనివారు.

తే. గీ. కాలమొకరీతి నెవ్వారు \* గడువంగలరు

ధరణియందున నినుమాల \* తల్లిప్రమమ్మ

రాజ్యమునువీడి పాండు పు \* తోకు లరణ్య

మందు వసియింప లేనె దా \* యలకలేమున,

తల్లీ! నీవు నన్నునుగా భావింపవలదు. నీవు మాగృహంబున నుండుము. నాపుత్రీక యొకటియును నీవొకటియును గాదు మీవారిజాడల నరయుటకై తగువానిని నియోగిం చెదను. నీవు సంతాప మొందవలదు.

తార—నుహత్మా! నీవే నాకుఁ దాడ్జీవంతివాడవు.

జయ—అమ్మా! నీవేమియు భయంబువలదు. రమ్మ.

(ఇరువురును : వ్యక్తమిచ్చుచున్నారు)

ఇది తృతీయాంకము.





## సంగీతకనకతార.

చతుర్థాంకము.

౧౬

రాముడు :—అగస్త్యుని దేశము.

[ప్రసంగము—వారునులి.]

చామ :—(సోహా) అది భగవంతుడు! సర్వేశ్వరుని కృత్యముల వాలు జేసితివి! అట్లే శ్రీమూర్తులైనవగు భక్తుల బలమున గృహంబునగు గూడ నిన్ను సేవించితివా? (నవ్వులు నవ్వుతల) ఏ కష్టము! ఏకన్నుల కన్నులు బలముగ నున్నవని నమ్మి నోహము జేసినవ. ఏ మాత్రము తాత్కాలికముగా బలమును విడిచివేసి, యాచారము నేమియుచులేదు. ఏమి, పాపము కట్టెరును పశువును నా? (నవ్వులు నవ్వుతల) అవును! మీరెందులకు? మీరు కష్టముచేత నధిపతి బడలేదని మాటలము నాకు ధృష్టములుగుచున్నది. అమ్మాయి! తారా!

తే. ౧. చెలియొక్క కలుకలు ♦ జలము కలకలు

భవ్యసౌధములందు ♦ ఒకరినొకరు

కాననాభిరు నేగితి ♦ కష్టములను

జెందుచుంటివా యగుచు ♦ గురుదాన.

నీతి గూడ నీయగ్గి బండును గూడ నుండేనని రాయకీర్తి సంతోషముగ నుడువని నీ చును. అయ్యో! ఏకైకమే సంతోషముగ నుచు? ఉ. ఎక్కడ కేగినా ఉచును ♦ డెప్పుడు నచ్చ నటించుచుచున్  
• మిక్కిలి గోరుచుండెదవు ♦ సిల్ప విగ తరమున్; మనమునన్

బొక్కుచుండి గుప్పుడెట ♦ బోలివి; తండ్రిగతించెనందు నీ

వక్కిట! పాణిముల్ విడిచి ♦ యున్నను బాయకయుందువేకదా.

నీయగ్గజంబు నీముద్దనే యున్నచో నీకెట్టి యిక్కట్టులును రానియక  
యుండునని నాకు ధైర్యమున్నది. (నడచుచు) ఒక్కటా! ఎండవేడిమి  
యతీతీష్ణిముగ చున్నది. నడుచుటకు శక్తిలేక యున్నది. (భగవతుని  
యుద్ధించి) హా పరమిర్వరా!

ఉ. ఎంతదూరంతచింత ఘట ♦ యల్లగా శయగజాలితీవు; శు

దాంతిముసూదూరీకిలు ♦ తడయుగొల్వగా నెప్పుడో వన

పాశ్రంతముశీర్షి యాకిరి శి ♦ బాధలుబెట్టుచు నున్నవాడ వా

యంతముసేయగాడె, మది ♦ యందు గృహవహించి దైవమా.

ఇట్టి ఒక్కట్టు గల్పించి బాధించుటకన్న నన్నొక్కసారిగా జూపివేసి  
నచో బాగుండుచుగదా? ప్లేదావ్చు నేనిట్లు పెనుకొండునుగాని, నీ  
వల్లల గొనుగొనుట. పూర్వజన్మమున కేదొకతులను. కేపిల్లలను  
జూచి సహింపలేకయుంటిరా? నూ పాపాపిష్ట ఉచుభవింపవలయును  
గదా?

|| రిలో పెగిలకలము.

చెన్నా--(స్వో 55) అయిదు! యింకలు కిగి చుట్టివాన్నది. నీ  
హానిన నీ వీగిచ్చువాన్నది. ఇమ్మోహిణ్యం బిచ్చి కిగిగిసత్వ  
చుయ్యు యు నీగుంధి నానాచ నీగిచ్చుచున్నది. (నడచుచు) అదిగో!  
వ్యాఘ్రంబొకటి యట్లహంసంబునీయుచు నీదెసకెవచ్చుచున్న  
ది నేను దంకకల బుత్తతేన నేటం గృతాన్ధురాల నగుచును  
అదిగో! అదిగో! అది నన్ను నమిపి చుచున్నది.

[తెఱిగో]

ఒకీ! నేవకా! ఆవ్యాఘ్రంబొస్తే వైకరుగఁ జూచుచున్నది. నీ  
ఘ్రంబుగా గాణమిటాదెమ్ము. దాని జూపి నూయబలచు రక్షించెదను.

చారు—ఆతఃకైష్ట్యో న దా!

(తెరవా కృష్ణ)

చారు—అమరముని భాణము తగిలి నేలబడుచు నావ్యాఘ్రంబు యరణ్యమంతయు బ్రతిధ్వనులిచ్చునట్లుచినది. అవుగో! పులిగొని పుష్కలమునకుఁ బ్రవేశించినాఁడు.

[సునుతిపి వేసెను.]

చారు—(సునుతిపి వేసెను.) పుష్కలమునకుఁ బ్రవేశించినాఁడు. రాజపాపాత్ములైన దిక్కుమాలినదానది. ఆగళ్ళ శీలమంతయు కైయుండియు, విధవశంబుల కరణ్యములును బెడిదపుకీడుములు బడుచున్న చారుగొని గృహవసూచి యావ్యాఘ్రంబునకుఁ బులివలెనుమాడ నీవేల సునుమాడితివి? నావ్యాఘ్రముచే నశింపబడి యుగిసేని నావృక్షములన్నియుఁ గల్గెక్కియుండుచు గదా?

సును—అయ్యో! సంతమాటాటివి?

తే. గీ. ఆమదానచ నైతిః † న్యాసుః క్షయః

యదుగురౌచుని నుడంగ † కరసః సుతుః

గర్భ సేను జూచుచుమాడ † గలకై యుగ

పాపింతును నెరిగె † భావమగు.

ఆపదబాధించినది జీర్ణకైసంత పరికుఁడైన పవలయును గదా? (ఇంచుకయూరకుగి) కాతామః కష్టసుఖములు కావటికుండల వంటివి. కొన్నాళ్లు చీకాయ కొన్నాళ్లు వెన్నెలయు నుండును గదా. అట్లే కష్టసుఖములుగూడ ప్రవీణులును సుఖవివలసియు న్నుడి. కష్టము వచ్చినపుడు దుఃఖములు, సుఖముగలిగి నప్పుడానందమును బొందుట లోకసామాన్యమైన సంగతియే.

చారు—అందరికష్టము వంటిదాగు సుఖవివలనది.

సును—సాక్షిమణి! నీయు కలెఱుఁడ నివృత్త మగురాజునకు

భార్యననియు, నిరవధికధనసంపత్తు చేత నెగజినదానననియు, దోచుచున్నది. నీయుదంతం బిసుమంత యెఱుంగఁదగును నేని యెఱింగింపఁగోరెదను.

చాను—అయ్యా! నాబ్రాహ్మకొక యభినాటకము వాటిది. భర్తగిరించినాడు కుమారియు. గుహానుశుచు నేక్కిరో వెలియదయ్యెను. ఇంతికిగఱును గుర్భరమగు కష్టమేమి కావలయును?

సుమ—తల్లీ! నన్నజూచిన నాకు మిగులజాలి కలుగుచున్నది. నేనీసమీపమున నున్న దాచునగరము : వసించుచున్నాఁడ. నీవు నాయెడలగృహనశించి నాస్తిహారులకు విచ్చేయును. నీవిచ్చట నీయుచ్చవచ్చినన్ని దినములుండవచ్చును. నాకును నిల్లాలకలదు. నిన్ను నేను మాతృభావమున నానెడనని విశ్వసింపును.

చాను—(శశలో) ఈసమయమున నిదియు మేలుగానేయున్నది. నెమ్మదిగా నీతినిగ్రహించున కరిగిన లెరువాత నానిష్కలజాడ నితరుచే దీయిం చెదఁగాక. ఈతఁడు పుష్పమతి యని తోచుచున్నది (ప్రకాశముగా) నాయనా! నీనాచుము నీవవచ్చినా?

సుమ—సుమతియందును.

చాను—నీవు నిచ్చయముగా నన్వరసంకుభేయుండను. నీవు నాయెడలజూపిన యాచారములగును నీవు నీవే వదనకరము ల్పొందుచున్నాను పొగొడతా! నీయుచ్చవచ్చిన యట్ల గావి నెదరు. నాయంనుగృహయూచి నానిష్కలజాడ నరయు భారము నీభుజస్కందము నందు వహింపఁ గోరెదను.

సుమ—తల్లీ! నీవేని యుభయమునందవలను, రమ్మ.

(ఇరువురును నిష్క్రమించుచున్నారు.)





రంగము:—[రామచగరంబున; సునుతిమందిరమునఁ

గమల ప్రవేశించును.]

కమ—(ప్రవేశించి) సఖితో! నాపురముసేయుట మిగుల కష్టముగదా! ఈ “నుదరి” జగమునదానే మహిమోదయ్య వలిననియు మగనిని, దనవశముజేసికొని యున్నవనియు మిగుల నిర్విఘ్నమున న్నది. ఇంతకును నాకెంతవలసిన సహజేగినున్నది? ముగించుచున్నచే పులకగతు నెరుగివచ్చి “కొమ్మలు వాకి” యను సాత్యంబు న్ననునా? ఆయె యాదరురా! నన్ను మోహంబు ముగించు నీవ నాప్రాణే న్నగునే సింగింపవలయును అక్కటా! ఆయనకు నాప్రామేల యవలెను. నాప్రాంతభలమిట్లున్నదిను కొనవలెను.

[చారునిని.]

చారు—(కమ) కమ! మిగుల అత్యంత నావనించుచున్నాను. కాని సునుతి రెండవధర్మయను సు నదిమాత్రము ఘోరముగాను కలదని యన్నది. ఆయె చిత్తులు ననుసరించి నేచును బ్రవర్తింపుమనే యుత్తర. (ప్రవేశించి) ఇదిగో! కమల నిచ్చుట నున్నది. (సమాపించి) అమ్మా! కమలా! దీర్ఘలోనవతత్సరై యుటివేర?

కమ—(చారును) . నామన! అదెచ్చి నీమిత్రులాలపు; రాజాధిరాజులకు భాగ్యంబు వికసించునట్లును కనెడివి? వేకున్న సామాన్యమునెచ్చిదా? నా! కన్నులు కప్పించి నాపురము సేయన్. తల్లీ! ఉన్నదానెయందు నీరుగారిత యేనియందుండును. నిన్ను నాప్రాణంబులతో సమానంబుగఁజూచు కొంపకేగాని నీచేతకాధ్యమగు నంతవఱకెట్టి కార్యంబులునుసేయింపను.

చారు—తల్లీ! కమలా! మీరునాకు జేయుచున్న యాదరంబు నాదుఃఖంబును గూడ మఱపించుచున్నది. నేను మీరు నిగుల్కము

కలుగజేయుచుంటినిగాదా యని మాత్రము విచారింపుచుంటిని.

కను—అమ్మా! చారుమతీ! నీవు మాగృహంబునకు వచ్చిన నాటనుడియు, నాకుమారుడగు నానంగుడు నన్నుమరచి యున్నాడు. నీవేతల్లివరుచు నొక్కనిమాషచురుగున నెవబాయక యున్నవాడు. నీవేరు కష్టములగుచుంటినిగాదా యని నేను సూచించుటచు చున్నాను.

చారు—నల్ల! నేను పనుకష్టమేరియును లేకు. మీబాలుని ముద్దుముచ్చటలుజూచుచు నున్న నాకు గుఱముకాడ నశింపుచున్నది.

[ఆనంగుడు—ప్రవేశము.]

కను—ఆరాదా! ఇటువచ్చు.

ఆనం—(చారుమతినిజూచి) చారుమతీ! నువ్వెవ్వక్కలికెళ్ళావు? నీకోసం అదంతా తిరిగితిరిగిచ్చాను. పిన్నమ్మయిటి కెళ్ళావేమో యని అక్కడికెళ్ళారు.

చారు—నాయనా! మీయమ్మగారితో మాట్లాడుచు నిచ్చటనున్నాను (తనలో) ఎట్టి సంతాపంబున నున్నను పసిబిడ్డలమాటలు విన్నంతనేయదిపోవునుగాదా! నాబిడ్డలను జూచు భాగ్యంబునాకు మరలయబ్బదోకదా!

కను—(ఆనంగునిజూచి) కుమారా? పిన్నమ్మగారి దగ్గఱకేల యరిగితివి?

ఆనం—మన చారుమతి వుండేమోలనుకొని.

కను—ఇకెప్పుడునున్న వెళ్ళకుము. ఆమెకుమనయందిష్టము లేనప్పుడేల పోవుచుండ వలయును. (చారుమతినిజూచి) చారుమతీ! మామాసపత్నులపొందిక జూచుచుంటివా!

చారు—ఇది సపత్నులున్న ప్రితిచోటున నున్నదే?

కను—అనుదాతనకు జనియూప కుండుట తనపురాకృతప్రీతి

రబ్ధమని తలంపవలయును గాని, నాకుఁ గుమారుండుదయంచెనని య నూయఁజెందియున్నందువలనఁ బ్రయోజనంబేమి యున్నది ?

తే. గీ. కొండెముల నెన్నియో ననుఁ ♦ గూర్చిపతికి

జెప్పుచుండును; నన్నువీ ♦ ట్లించినంత

మండిపడుచుండు నామీది ♦ మగువ; దాని

తోడ నేరీతినాకొనఁ ♦ గూడుఁబూత్తు.

ఇంతకును నానాధుండుఁడు కిచ్చిన చనువుంబట్టి గర్వాంధకారి ప్రమత్తహృదయు యున్నది. నీవయినను నామె యెట్టి జాగరూక రాలవయి మెలంగుచుండుటయే మంచిదని నాయభిప్రాయము.

చారు—నేనును నామె కనుగుణంబుగనే వతికొంపు చు న్నాను. కోపస్వభావయగు నామె యప్పుడప్పుడు నన్న కారణముగ నాగ్రహింపుచుండును. కాని నేనదిమనంబునఁ బెగఁబెట్టుకొనకుండుఁ గాలక్షేపము జేయుచుంటిని.

కమ—అమ్మా! నేడు నాభర్త యుచ్చటకు వచ్చెనేని నీబిడ్డల విషయప్రజాడల దీయుటకు దగు బ్రయత్నము సేయుమని చెప్పెదను.

చారు—సాధ్యమగు నాచర్యముకు మపకారము జేయదాన న నియోయాహింపుము. రమ్మ.

(నిష్క్రమింతురు.)

అంత

రంగము:—[సుందరిగృహ సమీపమున చారుమతి

యానగుని వెత్తుకొని ప్రవేశించును.]

చారు—నేనీగృహంబున బ్రవేశించినది మొదలీ బాలుండున న్నొక్క నిముషమైన విశ్రవకయున్నాఁడు.

అనగ—చారుమతి! మనం బోటలోకి వెళ్ళిపుష్పలుకొనుకుం దామురావ్వా ?

చారు—నాయనా ! ఇప్పుడు మనము వనమునకుఁ బోయితి మేని మీయమ్మ యాగ్రహించును.

[సుందరిగృహద్వారము దగ్గిఁబ్రవేశము.]

సుందరి—ఏమి ! నాచుతుతీ ! పొక్కిట మొదలుకొని నాయు తగుమనమును గూడ సమలగాఁ గృహంబుననే యుండవలయునా ? ఒక్కపాఠియైనను నిక్కడకు రాకూడదా ? నేనంత పాపిష్ఠురాలనా యేమిటి ?

చారు—అమ్మా ! పాతనామిబ్రవించి ! నాకామె యెక్కటియు నీవొకటియునా ? విధవనెంబున భర్తగొల్పబోయి, బిడ్డలూబాసి నేనీ గీలిం జేరితిని. ఎన్నడును వాచుచున్నను నొకప్పుడు ను సననేమోయెఱుంగని దానను, అట్టియెడల నెచ్చటికిఁబోవలెనును సిగ్గును. అంతకంటె మఱిమియుఁ గారణములేదు.

సుంద—పాపము నిద్రతనముచూడ భాగ్యదశకు రావచ్చును గాని, భాగ్యచతులు దరిహ్యం మెలగుట బహుళప్రము. అయినను నీవు నామొదల న్న సంతకంబును ద్విచుఁబొంద నవసరములేదు.

చారు—నేను మీగృహంబు నుండుట స్వంతగృహంబున నున్నట్టి భావింపుచుంటిని.

సుంద—ఈ యానామి కెప్పుడును ఏచోర దిగనేదిగిడు. (కుమారునిఁజూచి) ఆనాదా ! నే నెత్తుకొందును. ఇటురమ్మ. (చేయ జాపుచున్నది.)

చారు—వెళ్ళుము. మీపిన్నమ్మ పిలచుచున్నది.

ఆనం—(వెళ్ళక యూరకుండును)

సుంద—నాయనా ! మీయమ్మ నాదగ్గిఁకు వెళ్ళవద్దని చెప్పినామేమి ? రమ్మ. నీకేమియు భయములేదు. (బలవంతమున నెత్తుకొనును.)

చారు—అమ్మా! ఇంక పోవలయును. కమల కూడా నానికై కేకలువేయుచుండును.

సుంద—ఇంతలో కొందర యేమున్నది. నాముద్దు చుంకినవి చెప్పినచో గమల నిన్ను విడిచిచూడనాడేమి? (ప్రక్కజూచి) వర్మదా! వర్మదా! (అని కేకలువేయును.)

వర్మద—(ప్రవేశించి) అమ్మా! ఏమిసెలవు?

సుంద—మియునులేదు. గదియందు చెర మీద రెండు పండ్లున్నవి. ఆహారమునకు దెచ్చియున్నవి.

వర్మ—(అమ్మమించి నంటున ప్రవేశించి) ఎవరో. (గతి పండ్లనిచ్చును.)

సుంద—అబ్బే! మొల ముక్కపోలునవి. ఇంతటికక్కడనున్నవి? పోనీలే. నేను వచ్చుచున్నాను. (చారుమతిజూచి) చారుమతీ! అంత లికిరమ్మ. (అందఱును స్మరించును.)

\*\*\*

రంగము:—[కమలగృహమున నొక గది జూరము ప్రవేశము.]

చారు—(తనలో) ఈ! పరిమేష్వరా! నన్నెన్నివిధములఁ గష్టములఁ బెట్టదలచితివోదా!

చ. పతిగతియొపగామిగుల ♦ వంతులవలన; సీతీయున్న నా  
సుతుసుతుల జగంబునరుల ♦ జూచెడిభౌగ్యమువేకయున్న; ని  
గతిజనుడొచ్చి లుచ్చుటను ♦ కాలమువెల్లెగఁ గీయుచుండ; ని  
వెతఁగలుగంగఁజేసితివె ♦ పృథ్విని నిదనుఁ సూర్చితివేకటా.

అయ్యో! నేనేమని శోకింతును. యానందునకే సమయంబునందో సవ తిత్తల్యగు సుందరి యేసమయంబునందో విషముబెట్టి యానెవము నాపైఁబెట్టినది. సుమతియు, గమలయు నియ్యది నావలన జరిగినదే యని దూషింపుచున్నారు. (సుందరి నడ్డకొంచి) సుందరి! సీతవంతు

దోహకార్య మొనర్చితివి? నేనేమి నీకపకారి మాచరించితిని! యీ  
నింద నాపై నేలమోపితివి?

తే. గీ. సంతలేకున్న నా శిగఁ ♦ వంతుఁగూర్చి  
వేడుకొనియైన; లేకున్నఁ ♦ బృధ్విసురుల  
దానముల దన్నియైనను ♦ ధరణిమందు  
గాంచవలెఁగాక యీరీతి ♦ గలుషమతిని  
సవతిబిడ్డకు విషమిడి ♦ చంపనగునె.

ఈ దుర్యశబంది బ్రద్రకుటకన్న మరణించుటయే మంచిదికదా. అట్లు  
నర్చితి నేని నాకేకష్టములును లేకయుండును ఇబ్బదిసంబుల నుండియు  
జారుమతి మహాసాధ్వి యనియు, సుగుణముల పేటియనియు బలుకు  
చున్న సుమతీ చారుమతులే యిప్పుడు నన్ను మహాకూరురాలుగ  
భావించి దూషింపుచున్నారు. నేనేమని చెప్పినను నామాట నమ్మరు.  
ఇందలి సత్యాసత్యంబులు వారికి వెల్లడించువారెవరు! మహారాజాధి  
రాజునకు భార్యైన నేనెట్లు దుర్యశంబు పాలగుచుంటిని.

(తెరలో)

హా! కుమారా! మమ్ముల విడిచిపోయితివా! మూలక నేమిదిక్కు?

చారు—(తనలో, సుమతియు, గమలయు దనయునింగూర్చి  
శోకింపుచు నిట్లు నచ్చుచున్నారు.

[సుమతి, కమల ప్రవేశించుచున్నారు.]

సుమ—(చారుమతినిజూచి) హా! చారుమతీ! నీవెంతదు  
ష్కార్యంబాచరించితివి? ఇక్కుమారునకు విషంబిడుటకు నీకుఁజేతు  
లెల్లాడెను. పసిబాలుండగు వీడు నీకేమి యపకారంబాచరించినాడు.  
నేనొనర్చిన మేలున కియ్యది ప్రత్యుపకారమా?

తే. గీ. అడవియందునఁ బులివారఁ ♦ బడగనున్న

తేని నిన్నురక్షించి, చి ♦ తంబునందుఁ

గరుణవహించి; ప్రేమతోఁ ద గన్న బిడ్డ  
పగిది వీక్షింపుచున్నాడఁ ద బాపచిత్త.

భూపాలసత్తినైన నీవు విధినశంబున నిట్లయితివి కదాయని తలంచి నీకే  
విధమగు కొఱంతయు గలుగకుండ నాగృహంబున నిన్ను సాకు  
చున్నందులకు, “దిన్నయింట వాసంబు నెన్నుపగది” నాకుమారుని  
పాలిటికి మృత్యుదేవతవైతివి? అయ్యో! ఎవ్వరైనను జూచినంతనే  
యిబ్బాలుని ముద్దుఁగొందుకే. అట్టియెడల నీతని జంపుటకు నీకుఁజిత్త  
మెట్లు సమృత్తించినది?

కమ—సురాత్మరాలా! బిడ్డలగన్నదానవగు నీవు పుత్రవా  
త్సల్యమన నెట్టిదో యెఱింగియుండియు నిట్టి దారుణకృత్యంబుఁ జేసితివి?  
దీనివలన నీనందులూఠమేమున్నది? నీబిడ్డలు నీకుఁ గనబడకుండిరని  
నీవెంతగాఁ బరితపించుచుంటివి? అట్లే యెరులుగూడ చింతింతురని  
నీకుఁ దెలియదా? కులవిస్తారకుండైన పుత్రుంజంపి నాకు గర్భశోకం  
బుగలిగించితివికదా? (కుమారునుద్దేశించి) హా! తనయా! చరణంబు  
లనున్న గజలు ఘల్లుఘల్లునిమోయ, నెత్తుకొమ్మని పరుగుపరుగునవ  
చ్చి నన్నుఁ గౌఁగలించుకొనినప్పుడు నిన్నెత్తుకొని ముద్దాడు భాగ్యం  
బంతరించినది. చిలుకలకుం బలుకులనేర్పు నీముద్దుపలుకువిని యానం  
దించు సంతోషం బడుగింటినిది. తుమ్మెదతెక్కలవంటి నీశిరోజంబు  
లకు సంపదగిరూపెరాసి దుష్ప్రకోరిక నశించినది. అక్కటా నిన్నీపా  
పాత్మురాలగు చారుమతి వధించి తనపొట్ట పెట్టుకొనినది.

సుమ—మానినీమణీ! మన మరణాంతంబు మన కిన్నినిశ్చ  
యములు పోయునని యెవ్వనిపై నాసపడియుంటినో, యట్టికుమారుని  
మింగి మారుమాటాడక నిలచియున్న యీ చారుమతిం జూచి  
నచోఁ బంచమహాపాతకంబులును సూభవించును.

చారు—పుణ్యమూర్తులయిన యోదంపతులారా? ఏలమీరీ  
తినన్ను దూషించెదరు?

తే. గీ. నిజము, దైవమెఱుంగును ♦ నీరుపల్ల  
మెఱుగు; బాలుఁ జంపితినంచు ♦ నిట్లునన్ను  
సత్యమరయక దూషింపఁ ♦ జను నెమీకు  
సఖిలసాక్షియైనట్టి యా ♦ హరుఁడులేడె.

ఇతి గత్యుంచె. బిడ్డలబాడయా దెలియకుం డెను. దిక్కులేనిదాననగు  
నన్ను మీరు రక్షింపుచుండిరి. బిడ్డలఁగన్న దాననగు నేను పుత్రప్రేమ  
లతను నాహృదయంబునుండి గోసివేసి నాచేతులారఁ బెంచుచున్న  
మీకుమారుని జంపుదునా? మీరు నాయందుఁ గృపవహించి సత్య  
మునారయుఁడు. (తెరలో)

మృతిఁజెందినాడని తలంచిన మనయానందుఁడు వైద్యుఁడుపోసినయా  
షధంబుచేత విషంబు గ్రక్కి యించుక కన్నుఁదెఱచినాఁడు.

సుమ—ఏమీ! కుమారుఁడు విషంబుగ్రక్కి కన్ను తెఱచి  
నాడా! ఏమీ! మాభాగ్యము? (కమలనుజూచి) సతీ! ముందుగా  
గుమారునియొద్దకరుగుదము. ఈపాపాత్మురాలింగూర్చి యావల విచా  
రింతము (కమలతోనిష్క్రమించును.)

చారు—(దైవంబునుద్దేశించి) హా! పరమేశ్వరా! ఎట్లయినను  
నాకుమారుడు బ్రతుకునట్లు చేసినాకీ యపవాదఁబాపుము. నీపుత్రపు  
నాకెవ్వరును దిక్కులేరు.

[రాజభటులు ప్రవేశింతురు.]

రాజ—(చారుమతింజూచి) సీవేనా! సుమతి కుమారునకు  
విషముపెట్టినదానపు. పదఁద. రాజుగారి సముఖమునకు—

చారు—హా! ఇదియేమిగతి?

(రాజభటులు చారుమతిని గొనిపోవుచున్నారు).





రంగము; రాజసభా మందిరము ముందు:—

[కామపాలుడను సేనకుడు పోవేళించున.]

కామ—(తనలో) ఎక్కడనిన్ను త్రొక్కివేసిక బుణంబునందో యెవ్వరికీ తెలియదుకదా? ఈ కనకవర్మ యెక్కడివాడో ఇక్కడకు నిరుపేదలాగునవచ్చి ఈరాష్ట్రానికి రాజైనాడు. అయితే నేనొకబాంబు ధర్మంగా పరిపాలిస్తున్నాడు. బుర్రమంతుడు. తగాదాలు విచారించడంలో మంచి నేర్పువుంది. (ఇంచుకీయూరికుండ్) అన్నా! మఱియో యినాను, రాజుగారు యీవాళ వెంద్రీకాళే సభలుస్తారు కాబట్టి ఆసనాలన్నీ సిద్ధం చేయాలి. ఒక అడమనిషి రామనగరిలో సన్న సుమతి కొడుకుకు విషం పెట్టేందట. కుర్రాడుమాత్రం బ్రతికినాడట. ఆ తగాదా రాజుగారు యీవాళ విచారించు. ఇంద్రు వస్తారు.

(ఆసనములన్నియు వాటివాటి స్థానంబులయందు బెట్టుచున్నాడు.)  
(కనకసేనుడు మంత్రియగు సునందాడును యాసేనులగుచున్నారు.)

(16) పాట. కన్నడరాగము - ఉప్పా - ఏకతాళము.

ప॥ సచివాసునందనా యేమనంగు నానందము యిది నంబున.

అ॥ ప॥ విచిత్రగతి జరియించుచున్నది ఈదోషారోపణవిన్నది మొదలెమిహేతువో కుడికన్నదగుచు నామనంబు నాహ్లాదమునకబడె॥ సచి॥

కన—మంత్రి! సునందా! ఈదోషారోపణ నిగుల విచిత్రముగా నున్నది. అసుమతి గ్రహంబున నున్న యీ స్త్రీయాతని కుమారునకు విషంగిడునంతటి యవసరం బేమివచ్చినది?

సున—రాజేంద్రా! ఇయ్యది నాకుగూడ నచ్చుతము గలుగజేయుచున్నది. విచారణ యెత్తుకొననగాని ఇందలి సత్యా సత్యములు బయలుపడవు.

కన—సచివాగ్నిచీ? ఆసుమతికి నిరుప్రభుభార్యలు కలరని వినియున్నాడ; రెండవ భార్యనుకూడ రావలయునని యాజ్ఞాపత్రికఁ బంపియుంటివికదా?

సునం—పంపియుంటిని.

కన—(సేనకునిజూచి) సేనకా! ఫిర్యాది యగు సుమతి వచ్చి యుండెనేమో పిలుపుము.

సేన—(బిగ్గరిగా) సుమతీ! సుమతీ! (పిలుచుచున్నాడు)

సుమతీ—(ప్రవేశించును)

కన—(సుమతినిజూచి) సుమతి నీవేనా?

సుమ—చిత్తము.

కన—నీయభియోగమేమిటి?

సుమ—దేనా? చారుమతియను నామంబున నొప్పు నొక కాంతనాకుమారు నరయుచు నాగృహంబున నుండెను. దిక్కులేనిదగుటచే నేనామెను బోషించుచుంటిని. ఏమి దుర్బుద్ధిబుట్టినోగాని పసి కూనయగు నాకుమారున కామె విషం బిడనది. భగవత్కృపచే నాతడు బ్రదికినాడు. దేనా! ఇట్టి యకార్యం బాచరించినయామెను విచారించి న్యాయ మరచి శిక్షింపకపోయినచో కాంతలందీట్టి యకార్యములుప్రబలుచు.

కన—(సేనకునిజూచి) సేనకా! చారుమతినిబిలుపుము.

సేన—చారుమతి! చారుమతి—(అని గట్టిగాఁ బిలుచును)

చారు—(ప్రవేశించి నిలచుండును)

కన—(చారుమతినిజూచి తనలో) ఏమిదీ! వింతగానున్నది?

తే. గీ. అతివ నీమెనుగన్నంత, † నమ్మగన్నఁ

చందమునఁ దోచుచుండెను † స్వాంతమునకు

నగునుకాబోలు మాయమ్మ—(అలోచించి)

♦ యెనయెడల

నిట్టి కార్యంబు సేయునే ♦ యెన్నఁదైన.

ఇది వట్టిభ్రమ. (అలోచించి) పేరుగూడచారుమతియె. హృదయమా  
శౌందర పడకుము. (చారుమలింగుని) ని పేరేమి? ఏవ్వెరవు?

చారు—(తనలో) ఏమిటి ! ఈ నృపాలుని కంఠస్వరంబునురూ  
పంబును జూడ నాతనయ్యుండు స్థాపకమునకు వచ్చుచున్నాడు. (యోజిం  
చి) నేనెంత వెర్రినైతిని. నాకుమారుని బ్రహ్మకీర్త్యుండునా? బ్రదికి  
యుండినను సమస్తసంకడలును విడిచిన యాలో! పదవి నెట్లధిష్ఠించును.  
మనుజుని బోలు మనుజులుండరా? (ప్రకాశముగా) రాజేంద్రా! నేనె  
వ్వొనైన సేమి? ప్రస్తుతమిట్లుంటిని. నాపేరు చారుమతి.

కన—నీపై నీసుమతి తనకుమారునకు విషము బెట్టితివని యభి  
యోగము దెచ్చినాను. ఇందులకుగూర్చి నీవే ప్రత్యుత్తరంబిచ్చెదవు?

చారు—రాజా! చెప్పుటకేమున్నది. దిక్కులేవిదాననైననీ  
సుమతి కన్నకూతురు చందంబున రక్షింపుచున్నాడు. ఈ సుమతికు  
మారుని నే నెప్పుడును జగదంపకుండ నాడింపుచుంటిని. ఇట్లుండ నొ  
క్కదినంబునఁ గుమారుని నెత్తికొని సుమతి రెండవభార్యయగు సుంద  
రిగృహంబునకుఁ బోయితిని. ఆకమలయు గుమారుని నెత్తికొని, లాలిం  
పుచు లోపలికింగొనిపోయియతనికి కడఁగలమొకటియొసంగితి. ఆకడ  
శిశులంబు గుమారుడు భుజించిన యొకగడియకుఁ గన్నులు మూసినా  
డు. ఇంతకుతప్ప నేనేమియు నెఱుంగను. ఇందలి సత్యాస్యంబులనరసి  
దోషురాలనని నీకుఁ గోఁచెనేని శిక్షింపుము. వేయేల?

తే. గీ. తనయునకు విషమునిడితి ♦ ననెడువారు

నెత్తిపై నెక్క నే యెక్క ♦ నేనుబ్రదుక

జాల; నీదుఖమ్మన శీ ♦ ర్నంబుజెండి

పుణ్యమును గట్టుకొమ్మింక ♦ భూపవర్య.

సునం—సాస్వమణీ! మారాజంతటి నిర్దయుండుకాదు. న్యా  
యాన్యాయవిచారణపట్టియుండు.

కన—(మంత్రిగజూచి) సచివా! వింటివా! ఈ మెమాటలు  
కానిమ్ము. (సేవకునిజూచి) సేవకా! సుచుతి పెద్ద భార్యయగుకమలను  
బిలుపుము.

సేవ—కిమలా! కిమలా! (పిలచుచున్నాడు.)

కమల—(కుమారుని సహితంబుగా బ్ర)వేశించుచు)

కన—(కమలచు జూచి) ఈగుమారున కేనా చారుమతి విషమ  
డినదని దోషారోపణము చేయఁబడినది.

కమ—అప్పుచు.

కన—నీసవతి పేరేని?

కమ—సుందరి.

కన—సేవకా! సుందరిని బిలుపుము.

సేవ—సుందరి? సుందరి?

సుందరి—(ప్ర)వేశించి తనలో) అక్కటా! రచ్చకెక్కవలసి వ  
చ్చెనుగదా! తుదకియ్యది యెల్లుగాఁ బరిణమించునోకదా.

కన—(కిమలచుజూచి) కమలా! నేనడుగు ప్ర)ంబులకు సరి  
యైన ప్ర)త్యుత్తిరంబు లిమ్ము. ఈసుందరియు నీవును సఖ్యముతోడనే  
వర్తింపుచుండురా? లేదా?

కమ—రాజేంద్రా! సవతులలో నెకరిపై నొకరి కీర్ష్యయుండు  
ట సహజమని నీకుఁ దెలియకయుండునా?

కన—ఆ మె యింటికి నీవును నీవామె యింటికిని బోవుట యెప్పు  
డైననున్నదా?

కమ—లేదు.

కన—(సుందరిని జూచి) సుందరీ! ఇయ్యది నిజమేనా?

సుంద—సత్యమే.

కన—కమలా! తఱచు సుమతి యెవ్వరిగృహంబుననుండును?

కమ—సుందరి గృహంబుననే.

కన—నీకుమారుం డెప్పుడయినను సుందరిగృహంబున కిరుగు వాసుక కలదా?

కమ—ఎన్నఁడును లేదు.

కన—(చారుమతిని జూచి) చారుమతీ! నినొక దినంబున గు మారుని సుందరి మందిరంబునకుఁ గొనిపోయితి నంటివే. ఏకారణము నైఁ గొనిపోయితివి?

చారు—ఎత్తుకొని యాడింపుచుండ గృహద్వారంబున సుందరి నిలచుండి చన్నురమ్మని పిలచినది.

కన—(సుందరిని జూచి) సుందరీ! చారుమతి పలికినమాట సత్యమేనా?

సుంద—నిజమే.

కన—నీవీకుమారుని లోనికిఁగొనిపోయి కదళిఫల మిచ్చితివా?

సుంద—నే నీయలేదు.

కన—చారుమతీ! ఇంతకు పూర్వము బాలునకీమె కదళిఫల మిచ్చెనని చెప్పితివే.

చారు—అవును. వచ్చియురాని మాటలతో నీబాలుఁడు నా లోచెప్పినాఁడు.

కన—(బాలునిజూచి) బాలకా ఇటురమ్మ.

అనందుఁడు—(రాజును సమీపించుచున్నాఁడు)

కన—(చారుమతిని జూచి) చారుమతీ! నీవీకుమారునిఁ బిలుపుము.

చారు—అనందా! ఇటురమ్ము.

కన—సుందరీ! నీవు పిలుపుము.

సుంద—కుమారా! ఎత్తుకొందును రమ్ము.

అనం—పో. నేనురాను. నువ్వు చేదుపండు పెత్తావు. మొన్న పెత్తావు.

కన—ఇక్కడ జాలును. ఈయభియోగ మింక విచారింప నవసరములేదు. సత్యము బాలునివలన నే వెల్లడియైనది. నాటిదినంబున విషపూరితబగు కదళిఫలంబు సవతియందుండు నీర్వచే నీసుందరి కుమారునకొసంగిన సంగతియే నిశ్చయము. (సుందరిని జూచి) సుందరీ! ఇందు నేరిస్థురాలవు నీవని మాకు సంపూర్ణిగఁ దోచినది. కాదని నీ వింక నెన్నిచెప్ప దలంచుకొన్నను నమ్మము. కుమారుఁడు జీవించియుండిన కారణమున నీకు శిక్ష తగ్గినది. మూడు సంవత్సరములు నీవుకారాగృహంబున నుండవలయును.

సుంద—కష్టము. కష్టము.

సుమ—(సుందరిని జూచి) ఓసే! దురాత్మురాలా! తలగడక్కింద తాచువలె నీవు నాకు దాపరించితివి! ఇట్టిదానవని నేనెన్నడును తలపోయలేదు. నీవేకుమారునకు విషమిచ్చి సాధ్వీయగు నీమొపై యకారణనిందమోపితివి. భార్యయుండగా న్నొండుభార్యనుగైకొన్న నాకు దగినబుద్ధి వచ్చునట్లు జేసితివి.

కన—(నేవకుని జూచి) నేవకా! ఈసుందరి నిచ్చటనుంచి తీసికొనిపోమ్ము.

సేవ—వాతఫలమున కెవ్వరేమి సేయుదురు. రమ్ము.

(సుందరిని దీసికొనిపోవుచున్నాఁడు)

సుమ—(చారుమతం జూచి) తల్లీ! చారుమతీ!

తే. గీ. నావత్తి యిరీతి నొ ధ నర్చనంచు  
దలపజాలక యట్టి నిం ధ దాభరంబు  
సేపయిం బెట్టినాడ మ ధ నినుచినన్ను  
రమ్ము నాగృహంబునకును ధ రమ్యకృపను.

చారు—అయ్యా! ఇందు నీవుచేసిన దేమున్నది?

కన—(తనలో)

తే. గీ. అచ్చుగ్రుద్దికట్లుగడె మా ధ యమ్మమొగము  
నిమె మొగ మొక్కతీరుగా ధ (అలోచించి) నీమెనాడు  
తల్లి; సంశయింపఁగ నేల ధ ధాత్రీయందు  
సంచరించుటంజేసి ను ధ స్మించియుండె.

ప్రకాశముగా) సాద్యమణీ! నిన్నుజూచిన నాడెందంబున మిగుల సం  
దియంబగుచున్నది. కావున నీనిజమైన యుదంతం బెట్టిగో వచియించి  
నాకు సంతసము నింపుము.

చారు—(తనలో) ఏమోగాని యీతనిజూచిన నాకుమారు  
డని తోచుచున్నది.

మ. ఇతఁడే పుత్రుఁడు నాకు సందియము లేకదిం తేనియున్ నాడు మ  
ర్మతి, కూరుండల దుష్టబుద్ధి వధియిం ధ పంబంపఁగానెట్లొ యీ  
యతిన్ పుణ్యమజూపి తప్పకొనినాఁ ధ డగచున్ ముదాబార నా  
మతినూహించెద; (ఇంచుక యూరకుండి) యల్లెయకాను; సుత  
యే ధ మార్గంబునంబోయెనో.

(17) పాట. సురటరాగము - ఏకతాళము.

ప॥ యేమని వచియింతున్ నీతోడను తండ్రి.

ఆ॥ ప॥ నామహః యాపదల్కిట్టివి యని నెల్లువాపోవుదు॥ యే॥  
 ఈమహీచక్రిమేలు రాజచంద్ర భార్యను నానోముఫలమువ  
 లన యిటులనాకర్మము కాలిపోయె॥ యే॥

(ప్రకాశముగా) నాయనా! నాయుదంతం బేమని చెల్పుదును. నాకథ  
 యంతయుఁ గప్తలొక గ్రంథముగా వ్రాయవచ్చును. నాదీనచరిత్ర మే  
 మని తెలుపుదును.

తే. గీ. మఱదిచేతను భర్త చం ♦ పంగఁబడియె  
 బిడ్డలేదానినో వారు ♦ వెడలినారు  
 బహుశదుఃఖింబుఁ బొందుచుఁ ♦ బఱగుచుండి  
 బ్రదికియుంటిని జీవచ్చ ♦ వంబనగుచు.

కన—(తొండిరగా సింహాసనము దిగివచ్చి చారుమతిం జూచి)  
 అమ్మా! అమ్మా.

చారు—కుమారా! కనకవర్మా! (కొగలించుకొని యిరువురు  
 ను మూర్ఛబొందుచున్నారు)

సునం—(తనలో) ఏమి! వింత!

కన—(మూర్ఛబెలిసి లేచి)

సీ. మఱదియొనర్చుదు ♦ ర్థార్థకృత్యమునకు  
 నతిభయంబంది యె ♦ దరిగితమ్మ  
 కన్నబిడ్డలఁబాసి ♦ యెన్నెన్నెకష్టంబు  
 లొందుచు నెచ్చోట ♦ నుంటివమ్మ  
 సుకుమారివగు నీవు ♦ సుమతియింటను నెల్లు  
 దలఁదాచుకొంచును ♦ నలగితమ్మ  
 పతిఁబాసినట్టిదు ♦ ర్భరశోకమును మిగి  
 ధైర్యమేరితిని ♦ దాల్చితమ్మ



తే. గీ. తల్లినికథనొక్కింత ♦ చాచకుండ  
 బ్రాకటంబుగ వినివింపు ♦ నాకునిపుడు  
 కేను గనకసేనుడదల్లి ♦ నిక్కముగను  
 మొక్కువాడను మఱియింత ♦ మొక్కువాడ.

తే. గీ. అతిదరిద్రమందున ముట్టి ♦ నట్టనరుడు  
 మార్గమునద్రవ్యమును గన్న ♦ మాడ్కి;నర్థ  
 రాత్రిసమయంబునంగు న ♦ రణ్యమందా  
 జనెటిపాంథుండుదీపంబు ♦ గనినకరణ  
 నాడుడెంతము మిగులయా ♦ నందమంద.

చారు—వత్సా! కనకసేనా! బ్రదికియుంటినా తండ్రి! ఈ  
 నిర్భాగ్యురాలికెంతటి యదృష్టముపట్టినది!

తే. గీ. తనయ! నీముట్టుచెల్లెలు ♦ తారయేది!

కన—(తనలో)అక్కటా! ఏమనిచెప్పుమిను. (ప్రకాశముగా)  
 అమ్మా! అరణ్యంబున మేమిరువురమును విధివశంబున వేరువేరుతో  
 వలం బట్టితిమి.

చారు—

మామె యేదారిబోయెనో ♦ యరసిసావ  
 యెన్నికడగి స్థలగుఱచునో ♦ యెవ్వరెఱుగు  
 బ్రదికియున్నదోలేదోకో ♦ మదినిదలంప.

కన—తల్లీ! తారంగూర్చి నీవు చింతింపకుము ఆమెబ్రదికియు  
 న్నదని నేనువినియుంటిని. సత్వరముగ నే యామె జూడల నారసి  
 డొని వచ్చెద.

సుమ—(కనసేనునిం జూచి)

మ. ధరణీపాలక; నీదుతల్లియనిచి ♦ త్తంబాదుభావింపకా

కరణికో మత్సుతురక్షణంబునకు న్న ♦ కాంక్షించిత్తోడ్పెచ్చి;యా

పరిచర్య నియమించి నాడనతిపా • పాత్మ్యుడగాతియ్యడన్  
గురితంబున్ గృహగావవే యిపుడు ని • న్మున్ పేడెదన్ భూవరా.

మఱియు రెండవభార్య పలుకులవిని నిష్కారణాభి యోగింబి  
మెపై దెచ్చితిని. మన్నింపుము.

కిమ—(చారుమతిజూచి) అమ్మా! చారుమతి! ఎఱుగక  
నీయెడల మేమొనర్చిన యపరాధంబుల క్షమింపగోరెదము.

చారు—పూజ్యులగు నోదండతులారా! ఈయభియోగంబు  
కారణాంతరములచే నచ్చవది. మీరు నాకిడినశ్రీమ యేమున్నది?  
మీరు నాకొచ్చిన మహోపకారణమునకు జన్మజన్మముల కయినను  
మీయుణము నేనుదీర్పజాలను.

(తెరలో గలకలము.)

కన—(సేవకునిజూచి) సేవకా! ద్వారముకడ నాకలకల  
మేమో చూచిరమ్మ.

సేవ—చిత్తము. (నిష్క్రమించి వెంటనేప్రవేశించి) రాజేం  
దా! పాండ్యదేశపు పౌరులట. దేవరదర్శనార్థమై వచ్చినారు.

కన—లోపలికి రానిమ్మ.

సేవ—చిత్తము. (నిష్క్రమించి మరల పౌరులతో ప్రవేశము.)

మొదటిపౌరుడు—(రెండవ వానింజూచి) ఇడుగో మన చిత్రి  
సేనుని కుమారుడు. కనకవర్మ (రాజుంజూచి) రాజా! మమ్ములను,  
రాష్ట్రమునువదలి యిచ్చటనుంటివా? శ్రీమహడి నీజాడదీసి యిట్లువచ్చి  
నాము. దుష్టబుద్ధిపరిపాలనంబు మిగుల క్రూరంబుగా నున్నది. రాజ్యం  
బు విడిచిజనులు పోవుచున్నారు. నీవు కడురయంబునవచ్చి యాదుర్మార్గుని  
నుక్కడగించి, మమ్మును రాష్ట్రంబును బాలింపుము.

కన—పౌరులారా! మీరుపొందు. నేను రెండుమూడు దినం

బులలోనే యచ్చటి కరుదెంచి కార్యముచక్క బెల్లెదను. నారాక  
బురంబున నెవ్వరికినిఁ దెలియనీయక యుండును.

పౌరులు—చిత్తము. (నిష్క్ర.)

కన—(మంత్రీజూచి) మంత్రీ! వింటినిగదా. ఇంక మనమా  
ప్రయత్నంబున నుండవలయును. (సుమతింజూచి) సుమతీ! నిశ్చమాత  
ల్లికొనర్చిన మహిమకారగబు మఱువజాలను. నాగృహంబునమీరు  
కొన్నాఁగ్గుడవలయునని నాకోరిక.

సుమ—రాజేంద్రా! నీమాటకెదురాడ జాలము. నీవాదుష్ట  
బుద్ధిని దండించి నిరాభ్యమునకు బట్టి భిక్షియై వగు సవయంబున  
మేము తిప్పకయరుదెంచెదము.

కన—ఇందులకు మీరు తిప్పవలదు.

సుమ—ఇంక మాకనుభవముండు. (సుమతి, కమల-ఆనందుడు  
నిష్క్రమింతురు.)

కమ—(చారుమలింజూచి) అమ్మారమ్ము. భోజనమునకునీకు  
బోదెక్కుచున్నది.

(అందఱును నిష్క్రమింతురు.)

ఇది చతుర్థాంకము.





## సంగీతకనకతార.

60 చమాంకము.

—

రంగము:—పాండ్యదేశము.

[దుష్టబుద్ధి—విశారదుడు ప్రవేశము.]

దుష్ట—మూత్రీ! విశారదా! మాయన్నభార్యయగు చారుమతి యప్పుడుగంగలో బడుటకు బోయినది. పల్లెవాడొక స్త్రీ నదిలో బడగాఁదీసెనని నాకు వినియుంటిని. ఆసంగతి యేమయినఁదెలిసినదా?

విశా—(తనలో కూర్చుండగు నీతఁడింకను వారిపై చలము మానలేదుకదా. మీదుష్టతనము మానుకాలమెప్పుటికీ వచ్చునోకదా! (ప్రకాశముగా) ఏమియుఁ దెలియలేదు.

దుష్ట—సచివా! కనకసేతును, దారయుఁగూడ నరణ్యంబునకు వధింపబడుటకుఁ బంపఁబడిరి. వారింగూర్చి నాకావంతయు సందియములేదు. కాని, చారుమతి నిశ్చయముగా జీవించియుండెనేని యామెను రావించితీరవలయును.

విశా—దేవతకింత యాగ్రహమేల? జరిగినదేదో జరిగిపోయినది. ఇంతచలముతగదు. (తనలో) ఈదురాత్ముడు కనకవర్మ మరణించెననియే తలంపుచున్నాడు. నిన్నదేశదా పౌరులు నాకడకు రహస్యముగా వచ్చి కనకవర్మనుఁజూచి వచ్చితిమనియు నాతడు సత్వరముగనే వచ్చి రాజ్యమంతయుఁ వశము జేసికొనుననియుఁ జెప్పిరి.

(తెరలో)

తే. గీ. అన్ననువధించి తద్భార్య ♦ యైననాడు

తల్లినిగూడగా నెంచి ♦ దయనువీడి

మమ్ములవధింపగా నర † ఇమ్మునకును  
బంపుదుష్టుడెచట నున్న † వాడొచ్చెపుడ.

విశా—(తనలో) కనకవర్మయే కాబోలు వచ్చుచున్నాడు.

(తెరలో ధ్వని.)

దుష్ట—విశారదా! ఎక్కడనో రణదుందుభి వినవచ్చుచున్నది.  
అది యెయ్యదియో యొక్కింత యరయుము.

విశా—(నిష్క్రమించును.)

దుష్ట—(తనలో) ఇప్పుడు నాపైకి యుద్ధమునకు వచ్చువారెవ  
రుందురు. (అటునిటుఁజూచి) సంగతి సరయుటకుఁ బోయిన విశారదుం  
డింకను రాలేదేమికారణమోగదా!

(ఖడ్గధరుడై కనకవర్మ పువ్వేళించును.)

(18) పాట. మోహనరాగము - ఆటతాళము.

ప॥ ఓరిదురాత్మా । ఓరీకృరా । యోరీపాపీ యోరీ దుష్టబుద్ధి  
దిగరా గడె.

అ॥ ప॥ కృరా నన్నుజంపఁ । ఘోరాటవిక్రీ బంపఁ బుచ్చితిమని  
యా నీకీముచ్చట॥ ఓరీ॥

కస—(దుష్టబుద్ధినిఁజూచి) ఓరీ! దురాత్మా! దుష్టబుద్ధీ!

తే. గీ. కనకవర్మను సేన్మునఁ † గాననమునఁ

జంపఁబంపవెతారతో † జావలేదు

దైవకృపచేత జీవించి † ధరణియందు

నిన్నుఁగూల్పవచ్చితి నేడు † సీచహృదయ.

పనీవాండ్రమగుటచే నప్పుడట్లు చేయఁగలిగితివిగాని నేడెందుబోగల  
వు? ఏకగర్భజనింతుండగు నన్నును బలవంతంబునఁ జంపి, కన్న తల్లి  
ప్రమానయగు తద్భార్యను హరింపఁదలచి, మమ్ము వధింప బంపినన్ని

రణంబున ఖండించి శరీరంబు నింతింతలుగాఁ జేసి పక్షులకు వైచినను పాపములేదు.

దుష్ట—(తనలో) ఈతనిని నాడు కింకరు లరణ్యంబున వధింప లేదుకాబోలు. గుడ్లువచ్చి పిల్లను వెక్కిరించినదనునట్లు వీడెంతలో నెంతవాడైనాడు. కానిమ్ము. (ప్రకాశముగా) ఓరీ! నీవన్నకుమారుఁ డవయిన నగుదువుగాక (ప్రకాశముగా.)

ఉ. ఎందుల కేగుదెంచితిటు ♦ వేటికి బోలేదు కాఱుకూతలొ

మందమతీ! యెకింతయును ♦ మానసమందున భీతిలేక నా

డెందుకొచావకుండఁగను ♦ నెట్టులొ బోతివిగాని నేడుని

మందఁగఁజేయువాడనను ♦ మానముబూనక ; యోరిడింభకా.

. కన—ఓరీ! తులువా! ఈ కనకసేనుండు పూర్వపు గనకసే నుండని భావింపకుము.

మ. అనిచేబూనితి నిల్వమియెదుట ను ♦ దృశ్యైర్వమేపారఁగా  
మసిగాజేతు శరాగ్నివైచినినుదు ♦ ర్ధార్థంబునం దండ్రిని  
వెనఁజంపంగ సహించినానపుడు దో ♦ ద్వీర్యంబులేకుంట నా  
కసిదీర్తు ప్రజలెల్లజూడఁగగృత ♦ ఘ్న సత్కుల ధ్వంసకా.  
(కత్తిదిప్పచున్నాడు.)

దుష్ట—నీప్రగల్భవాక్యంబులఁ గట్టిపెట్టుము. (ప్రక్కకుదిరిగి చూచి) ఓరీ! సేవకా!

కన—ఓరీ! నీకింకను సేవకులు బలుకుదురా! ఇంక నీమాట వినువారిచ్చట నెవ్వరును లేరు. ఇంక నీశరంబు నాకరాసి కెఱగా నిచ్చుటకు సిద్ధముగా నుండుము.

దుష్ట—ఏమిరా! నీకండకావరము. ఇదిగో! నీపొంగడగించెద ను. రమ్మ—

(ఇరువురును యుద్ధమునకు మొనయుచున్నారు.)

కన—(దుష్టబుద్ధిని బట్టుకొని) తులువా ! ఇప్పుడునీవు నాచే  
తితో సంపూర్ణముగాఁ జిక్కితివి.

తే. గీ. పాపమంచును దలవక ♦ భావమందు  
మాకు నెక్కులుసల్పు దు ♦ రాగ్ధర్మము  
కరుణబూనక మొక్కింత ♦ కలుషచరిత !  
కఱకుగ త్తనిఁ గంతంబు ♦ నముకుచుంటి.

(నటుకఁబోవును.)

చారుమతి—(తొందరగాఁ బ్రవేశించి.)

తరల.

వలచుని వధింప; సత్కృప ♦ భావమందునఁ బూనుమా  
తులవబుద్ధిని బూనియెగ్గులు ♦ దుష్టులై మొనరించిన  
దలపఁగా బినతండ్రి కుటలు ♦ తప్పులకొ ముయింపుచు  
విడువమీతని పుణ్యమబ్బెడు ♦ విజ్ఞులెల్లరు మెచ్చగా.

వత్సా ! అన్నగారినిఁ జంపిన నీతనిం గూర్చి జనులొన్నివిధంబులఁ జెప్పు  
కొనుచున్నారు.

కన—(చారుమతింజూచి) అమ్మా !

తం. జనకునిగూర్చి యర్థనిశి ♦ సాహసమేర్పడి నిర్ముఁబట్టఁగా  
మనమున నెంచి మమ్ములను ♦ మారణ సేయగ నెంచినట్టి దు  
ర్జనుడు ధరాస్థలంబునను ♦ జావగఁజూడవదేమిచిత్రమో  
జనని; యఘు బెయైన నగు ♦ జంపకవీడును మప్తబుద్ధిని.

చారు—తండ్రీ ! నామాట వినుము. పినతండ్రిని వధించినాఁ  
డను దుర్యశమాచంద్రతారకముగా నుడుచు.

(జయసేనుఁడు తార ప్రవేశింతురు.)

తార—(తొందరగాఁ బ్రవేశించి) హా ! సాదరా ! ఎన్నొళ్లకు

జూడగల్గితిని. (తల్లినిచూచి) తల్లీ! నన్నొక్కసారిఁ గాగలించు కొనుము.

కన—(తారంజూచి.)

తే. గీ. నీరములను దెచ్చుటకునై ♦ నేనుబోయి

వచ్చుసరికివచట గాన ♦ వైతి;వకట

భూరిదుఃఖాబ్దిలోపల ♦ మునినాడ

. జెల్లెలాబ్రతికితే మమ్మువీ ♦ క్షింపభువిని.

అమ్మా! ఇప్పుడుమనకు సంపూర్ణ సంతోషము గలిగినది.

చారు—కుమారీ! తారా! నీపెన్ని యిక్కట్ల పాలుబడితి వోకదా.

జయ—(కనకవర్ణంజూచి) కనకవర్మా! నీజాడల నరసి యరసి నీవిట్లరు దెంచుట యాలించి యామెం దోడ్కొని వచ్చితిని. మిమ్ములనందఱఁ జూడగలిగినందులకు నాకు గల్గుచున్న యానందము నకు మేరలేక యున్నది. నీయగ్రజనియొద్దకు నిన్ను దోడ్కొని పోవు దునని యామెతోజేసిన ప్రతిజ్ఞ జెల్లించుకొంటిని.

తార—అన్నయ్యా! ఈతడునాకుఁ బ్రాణదాన మొసంగిన మహాను భావుండు. అరణ్యాబున కిరాతులచేఁ జంపబడనున్న నన్ను రక్షించి, తనగృహాబునకు దోడ్కొనిపోయి కన్నబిడ్డ చందంబున నర సిన పుణ్యశీలుండు కల్యాణపురాధీశ్వరుండగు జయసేచుడు.

కన—(జయసేనునిజూచి) రాజేంద్రా! నమస్కారములు. నీనిష్ఠేతుక కృప మిగుల వినుతింపఁ దగియున్నది.

(విశారదుండు ప్రవేశించును.

కన—(విశారదునిజూచి) మంత్రీ విశారదా! చిరకాలంబు నకు నిన్ను జూడగంటిని.



జయ—విశారదా ! గనక సేనునిరాకయు లేపటి దినం బీతని పట్టాభిషేక మహాత్మ్యవంబును బురంబునఁ జూటఁ బొప్పుము.

విశా—మంచిది.

కన—(దుష్ట బుద్ధినిఁజూచి) దుష్టబుద్ధీ !

తే. గీ. అమ్మవాక్యంబులాలించి ♦ యాత్మయందు

భవ్యకృపఁదాల్చి నిన్నును ♦ వదలుచుంటి

యపయశంబుదగావలె ♦ నంచుదలచి

యింక నైనను సర్కుడ్డి ♦ నెసగుమయ్య.

నీజీవనోపాధికిఁ దగిన దృవ్యంబు నే నొసంగెదను. నీవు నారాజ్యంబున నుండ నర్హుడవుతావు. కావున నీవు నారాజ్యంబు విడిచి నేజే పోవల యును. దెలిసినదా. (చారుమతింజూచి) అమ్మా ! చెల్లెలు పాణింబు లను రక్షించి రుంచిన యీ మహానుభావుని మనము గౌరవింపవల యును. (జయసేనునిజూచి) పాణిబంధూ ! జయసేనా ! రమ్మ.

చారుమతి—కనకవర్మ-జయసేనుఁ-విశారదుడు నిష్క్రమింతురు.)

(19) పాట. హిం॥ శోడిరాగము - ఏకతాళము.

ప॥ యింతటిదుర్గతి నాకుఁఘటించునంచు యింతుక నెంచనైతి.

అ॥ ప॥ సుంతయు హృదయమునందు శాంతము లేక యనేకదురితకృ త్యముల్ । అంతములేని గర్వముతోడఁ సన్నితినయ్యా । యింతకాలమున కీ । కనకవర్మ నాగర్వము సర్వము ఖర్వము జేసెను॥ యింత॥

దుష్ట—(తనలో) ఆహా ! కాలమెంతలోమారిపోయినది. అగ్ర జునిజంబే రాజ్యంబంతయు వశంబు జేసికొంటినని గర్వించితిని. అట్టి నాగ ర్వమడగినది. అవును. నాయటి పాపాత్ముడిట్టి స్థితిని బొందవలసినజే. అగ్రజని వధించి యాతని భార్యను బట్టదలంచిన దుర్మతిైన నాకు దత్తావధలంబుచు భ వింపకతీరునా? ఈ కనకవర్మ నన్ను బురంబు

విడిచి నేడే పొమ్మనినాడు, కానిమ్ము-విధివారిత నెవ్వఁడు దప్పించఁ గలఁడు.

(నిష్క్రమించును.)

రంగము:— పట్టాభిషేకము.

(కనకసేతుడు—తార—చారుమతి, జయసేతుడు, విశారదుడు  
మొదలగువారు ప్రవేశము)

కన—(చారుమతింజూచి) అమ్మా! దురాత్ముండగు దుష్టబుద్ధి  
మూలమున మన మెన్ని యిక్కట్లపాలునను నురల మన రాష్ట్రం  
బునకు మనము జేరుకొంటిమి! మాతండ్రిగారు రాజ్యసింహాసనము  
నేనధిష్ఠింపఁగలిగితిని.

జయ—కనకవర్మా! ఇది మాతల్లిగారి కడుపు చలువయని  
తలంపవలయును.

(పౌరులందరును ప్రవేశము)

పౌరు—మహాప్రభూ! మాకన్నులకిప్పు డానందముగలిగినది.  
మిమ్ములను తరిమివేసి యాదుష్టబుద్ధి మమ్ములెట్టిన యిశుమలు చెప్పన  
లవికాదు. నాయన! నీవాచంద్రితారకముగా మీతండ్రిగారి పాల  
నంబువలెనేధరణి బాలించెదవుగాక.

కన—పౌరులారా! మీరురహస్యముగ నాకడకు వచ్చి దుష్ట  
బుద్ధికృత్యంబులను జెప్పినప్పుడునే నరుదొచెదనని చెప్పియుంటిని.  
అట్లానర్పితిని గదా. ఇంక నేమి కావలయును?

జయ—పౌరులకు నీపరిపాలనంబు చల్లగా నుండుటయేక డా  
కావలసినది! ఇంక నేమికాలెను? అయిన నిట్లగుంగాక.

తే॥ గీ॥ ధరణిసస్యసమృద్ధియై † తనరుగాక  
పార్థివ్రలుపరాంగనలకై † పరితపింప

కుండెదరుగాక ! కాంతలీ' యుర్వియందు  
సుగుణభూషణులొచును ♦ నెగడగాగ.

(20) పాట. హారతిపాట.

ప॥ హారతిదేగనుగొనుమా అంబా॥ పార్వతీసత్కృపా॥

అ॥ ప॥ హారతిదే జయహారతి సమ్మతితోగొని దయతో మమ్ముల  
బోధింపుము॥ హార॥

పరమపావనచరిత హిమవంత । దుహితాదురిత । రహిత ।  
మునిజన వినుతా॥ హార॥

నిరతము నెరనమ్మితిమమ్మా । అమ్మల । గన్న యమ్మా మమ్మేలు  
హార॥

పంచమాంకము సంపూర్ణము.





# ఆంధ్రాబుక్కు-డిపో, రాజమండ్రి



## వైద్యగ్రంథములు.

|                           |      |
|---------------------------|------|
| వైద్యశత్రోక్తి టి. తా.    | 0 8  |
| అనువాసమంజరి డిటా          | 0 8  |
| అంబరాజీయము ,,             | 0 8  |
| కాగధసంహిత                 | 3 0  |
| సుశ్రుతశారీరము            | 2 8  |
| సేత్తిదగ్ధము              | 0 8  |
| ధన్వంతరీవిజయము            | 0 8  |
| వ్రణచికిత్స               | 0 8  |
| దంతశోధిని                 | 0 0  |
| ఆంగ్లేయవైద్యచింతామణి      | 4 0  |
| ఆంగ్లేయబౌద్ధగుదీపిక       | 3 0  |
| ధన్వంతరీఋషిముఖ            | 2 8  |
| బసవరాజీయము                | 7 0  |
| చికిత్సారత్నము            | 1 4  |
| వైద్యామృతం                | 1 4  |
| శ్రీవైద్యచింతామణి 2 సం }  | 10 0 |
| పుటములుగలది కొత్తకూర్పు } |      |
| పసిష్టపోక్తిము            | 1 8  |
| వ్యాసపోక్తిము             | 1 8  |
| సర్వోపధగూఢకల్పము          | 2 8  |
| నాడిపరిక్షాసము            | 0 8  |
| పానీయకల్పవల్లి            | 0 4  |
| కలరా                      | 0 8  |
| చలిజ్వరము                 | 0 8  |
| అంటునాధులు                | 1 0  |
| చంటిబిడ్డ                 | 1 0  |
| రసవదీపిక టి తా.           | 0 12 |
| భేషజకల్పము                | 0 8  |
| శతశస్త్రపాక్షి ప్రకాశిక   | 0 9  |
| మూసానీవైద్యామృతం          | 0 12 |

## వైద్యగ్రంథములు.

|                         |      |
|-------------------------|------|
| ధన్వంతరీవైద్యచిక్తాసారం | 0 12 |
| ఆయుర్వేదసారసంగ్రహం      | 0 8  |
| స్వరకామ్రము             | 1 4  |
| బ్రహ్మవైద్యరత్నాకరము    | 2 8  |
| చక్రచక్ర తాత్పర్యంసహ    | 3 12 |
| చికిత్సాసారము           | 2 8  |
| వైద్యప్రసారము           | 0 8  |
| ఆయుర్వేదశాస్త్రయోగము    | 1 0  |
| మాధవనిధానము             | 3 0  |
| రసేంద్రచింతామణి         | 2 8  |
| వాణీకరకల్పగ్రంథము       | 1 8  |
| మానవధర్మచంద్రిక         | 2 0  |
| షడ్రీపునిఘంటువు         | 0 8  |
| సుఖిరోచికిత్సారత్నాకరం  | 0 8  |

## ఆనందాప్రస్ఫువారి పుస్తకములు.

|                    |      |
|--------------------|------|
| మనుచరిత్ర          | 2 0  |
| సీతారామాంజనేయం     | 3 4  |
| రాఘవహంధవీయం        | 2 0  |
| సప్తమస్కంధము మూలం  | 0 8  |
| డిటా టి. తా.       | 1 8  |
| మనుచరిత్ర          | 4 0  |
| అమరము మూలము        | 0 8  |
| మందరకాండ మూలం      | 1 0  |
| రుక్మిణీకల్యాణము   | 0 12 |
| గజేంద్రమోక్షము     | 0 12 |
| నీతిచంద్రిక        | 0 8  |
| ఆంధ్రనిఘంటుత్రియము | 0 14 |
| డిటా క్యాలిఫో      | 1 2  |

వలయువారిట్లు న్యాయము:—

మాడేటి సన్యాసయ్య,  
ఆంధ్రాబుక్కు-డిపో, రాజమండ్రి.

# ఆంధ్రాబుక్కు-డిపో, రాజమండ్రి.

## ఆంధ్రానాటకములు.

|                         |            |
|-------------------------|------------|
| గయోపాఖ్యానము            | 0-8-0      |
| ప్రసన్నయాదనము           | 0-8-0      |
| పారిజాతాపహరణము          | 0-8-0      |
| చతురచంద్రహాసీయము        | 0-8-0      |
| చార్యతీపరిణయము          | 0-8-0      |
| బొబ్బిలియంధము           | 1 0-0      |
| సంగీత చంద్రాకాంత        | 0-10-0     |
| సంగీత శశిశేఖ            | 0-12 0     |
| సంగీతపాదుకాపట్టాభిషేకము | 0-12-0     |
| సంగీతపాశుపతాస్త్రనీయం   | 0-8-0      |
| సంగీతసైంధవాస్త్రనీయం    | 0-8-0      |
| సంగీతచింతామణి           | 1-0-0      |
| సంగీత శ్రీకృష్ణకుల      | } „ 0-12 0 |
| భారం చక్రని సాం         |            |
| స్వతో సహా               |            |
| సంగీత పరిష్కారము        | 0-12-0     |
| చిత్రసభియం              | 1-8-0      |
| విహారసారంగధర            | 1 8-0      |
| పాదుకాపట్టాభిషేకము      | 1-4-0      |
| జయంతజయపాల               | 0-8-0      |
| పాండవాజ్ఞాతనాసం         | 0-8-0      |
| సంగీతలంకారనానము         | 0-10-0     |
| సంగీతస్త్రీసాహసం        | 0-12-0     |
| సంగీత సావిత్రి          | 1-0-0      |
| మణిమాల                  | 0-12-0     |
| వేశ్యాహితబోధిని         | 1-0-0      |
| చింతామణి కా   వా        | 1-2-0      |
| కోహిణీనుధాకరవిజయం       | 0-12-0     |
| సుభద్రాస్థనీయం          | 0-12 0     |

## ఆంధ్రానాటకములు.

|                       |        |
|-----------------------|--------|
| సంగీత సత్యహరిశ్చంద్ర  | 0-12-0 |
| కుశలన                 | 0-12-0 |
| ఊర్వశీకాపని మోచనము    | 0-12-0 |
| లీలావతి               | 0-8-0  |
| సంగీతపద్మిని          | 0 10-0 |
| సారంగధర               | 0 12-0 |
| రసపుత్రవిజయం          | 0 14-0 |
| ఆంధ్రానాటకకృతులు      | 0-12-0 |
| విజయబొబ్బిలి          | 0-12-0 |
| సంగీతజగన్మోహిని       | 0-12-0 |
| శ్రీకృష్ణనిర్వాణము    | 0-8-0  |
| పృథ్వీపతిపృథ్వీమృగం   | 1-0-0  |
| సత్యహరిశ్చంద్రీయము    | 1-0-0  |
| సంపూర్ణరామాయణం        | 1-4-0  |
| శ్రీనివాసకల్యాణము     | 0-8-0  |
| సౌగంధికం              | 0-8-0  |
| కంతాధరణము             | 0-12-0 |
| ద్రౌపదివిరణయము        | 0-12-0 |
| శ్రీరామ జననము దో   శీ | 0-8-0  |
| శ్రీరామ పృథ్వీసము     | 0-8-0  |
| శ్రీరామ పురోగము       | 0-8-0  |
| శ్రీరామ విజయము        | 0-8-0  |
| శ్రీరామ ఆశ్వమేధము     | 0-8-0  |
| ఉపాపరిణయము            | 0-8-0  |
| వేశ్యామధురము          | 0-12-0 |
| పరిష్కార బుద్ధి       | 1-4-0  |



వలయువారిట్లు వ్రాయుడు:—

మాదేటి సన్యాసయ్య,  
ఆంధ్రాబుక్కు-డిపో, రాజమండ్రి.











